साप्ताहिक भविष्य

७ जून से १३ जून १६७६ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : इस राशि वालों के लिए ग्रहणफल अशुभ है. किसी चल रहे काम में विघ्न या कोई बना बनाया काम भी बिगड़ सकता है. परिवार में सुख भी एवं चिन्ता भी, नया काम प्रारम्भ न करें।

वृष : ग्रहण का प्रभाव इस राशि पर शुभ है, कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होंगे जिसमें लाभ की आशाएं बढ़ेंगी, आय में वृद्धि के साथ-साथ घरेलू व्यय भी बढ़ेगा, परिश्रम करने पर शुभ-अशुभ मिश्रितफल प्राप्त होंगे।

मिथुन : आर्थिक कठिनाई धीरे-धीरे दूर होने लगेगी और कारोबार कामों में भी रुचि बढ़ेगी, ग्रहणफल शुभ है, कोई देर से अधूरा पड़ा काम पूरा हो जावेगा, लाभ में वृद्धि, भाग्य साथ देगा, यात्रा की आशा है।

कर्क : इस राशि पर ग्रहणफल मध्यम है, व्यापारिक स्थिति अनुकूल चलने पर भी लाभ आशा से कम होगा, किसी विशेष काम में निराशा, सफलता के मार्ग में रुकावटें आयेंगी।

सिंह : ग्रहणफल नेष्ट है, कोई ऐसी घटना हो सकती है जिसका प्रभाव काफी लम्बे समय तक चलेगा, झगड़े आदि से बचें, कारोबार में रुकावट या लाभ कुछ देरी से मिलेगा, कोई विशेष सूचना मिलेगी, परिवार से सुख।

कन्या : किसी विशेष काम में सफलता परन्तु संघर्ष भी काफी करना होगा, व्यापारिक दृष्टि से देखें तो सप्ताह अच्छा है, लाभ पहले जैसा तो होता रहेगा, ग्रहणफल मध्यम है, कोई अधूरा काम बन जाएगा।

तुला : इस राशि पर ग्रहण का प्रभाव शुभ रहेगा, कारोबार में उन्नति एवं देर से चला आ रही योजना शुरू हो जायेगी, भाग्य साथ देगा, कुछ महत्वपूर्ण काम बन सकेंगे, परिश्रम सफल रहेगा घरेलू चिन्ता बनी रहेगी।

वृश्चिक : परिश्रम करने पर शुभ अशुभ मिश्रितफलों की प्राप्ति होती रहेगी, किसी पुरानी उलझन से छुटकारा मिलेगा, तो कोई नई समस्या खड़ी हो जावेगी, ग्रहणफल मध्यम है, कारोबार ठीक चलेगा।

धनु : स्वास्थ्य में बिगाड़ या मानसिक परेशानी काफी रहेगी, कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होने पर भी लाभ आशा से कम मिलेगा, ग्रहणफल अशुभ है, अजनबी लोगों से बचें, हानि का भय है आय यथार्थ, व्यय बढ़ेगा।

मकर : सौशल कामों में काफी व्यस्त रहोगे, कोई विशेष समाचार मिलेगा, कामकाज में काफी रुचि बढ़ेगी, नई वस्तुओं की खरीद होगी, सरकारी कामों में सफलता, नातेदारों से मेल-जोल, यात्रा में सुख।

कुम्भ : इस राशि पर ग्रहण का प्रभाव काफी नेष्ट है, स्वास्थ्य में अचानक ही बिगाड़ पड़ सकता है, अथवा कोई नई उलझन पैदा हो सकती है, विरोधी अधिक, चल रही योजनाओं में विघ्न, परिवार से सुख।

मीन : आमदनी में रुकावट और मिलेगा भी आशा से कम ही, ग्रहणफल अशुभ है, कुसंगत से बचें, कोई झूठा आरोप भी लगा सकता है, सरकारी कामों में परेशानी, झगड़े आदि से दूर ही रहें।

आपके पत्र

दीवाना अंक १५ मिला, लेकिन बहुत इन्तजार किया तभी दीवाना अंक १५ मिला, पढ़कर मन में जो बेचैनी थी उसे चैन मिला। दीवाना का मुखपृष्ठ जो कि योग आश्रम से सम्बन्धित था बहुत प्यारा लगा। 'पंचतन्त्र के अन्तर्गत', पीना सिगरेट बिल्ली मौसी का ऐसे लगा कि मेरा ही जन्म दिवस हो और मुझे चूहे महाराज ने गिफ्ट दिया। फिल्म पैरोडी सरकारी मर्तबान-बनाम सरकारी मेहमान ने हंसा-हंसा मुझे दीवाना बना दिया। **मदन किशोर होलवानी—रायपुर**

१० मई को दीवाना प्राप्त हुआ। यूं तो सभी फीचर शानदार थे। फिल्म पैरोडी 'सरकारी मर्तबान' बहुत ही जबरदस्त रही। हमारे नेता गण पैकर सीरीज में, पढ़ कर तो मुंह से वाह! वाह!! कहे बिन न रह सका, परन्तु बड़े खेद की बात है कि पिछले कई अंकों से दीवाना में हमारा प्रिय स्तम्भ चिल्ली लीला नहीं छप रहा, क्यों? मुझे शिकायत है दीवाना के उन पाठकों से जो दीवाना को जबरदस्ती बच्चों की पत्रिका घोषित करने पर तुले हैं, ये पाठक दीवाना के लिए 'पत्रिकाओं की रानी' जैसा सम्बोधन देते हैं, जो सर्वथा अनुचित है क्योंकि दीवाना पुल्लिंग है। आशा है आगे से वे पाठक इस बात का ध्यान रखेंगे।

रमेश कुमार—जनौली

दीवाना का अंक १४ विश्व के दो महान हास्य कलाकारों के चित्र से सजा हुआ आज काफी इन्तजार के बाद मिला। हर दृष्टि से पूर्ण, इस अत्यन्त आकर्षक अंक ने मुझे बेहद ही प्रभावित किया। विशेष रूप से फिल्म पैरोडी—जलता बल्ब तार, राजनीति में फिल्मी गानों की कलई, मूर्खतापूर्ण प्रश्नों के मूर्खता पूर्ण जवाब। मोटू-पतलू बेहद ही रोमांचक होता जा रहा है। कृपया संगीता के उपन्यास 'ठोकर' के कुछ ज्यादा पृष्ठ दिया करें, सवाल यह है? इस बार कुछ जमा नहीं! इस अंक की दोनों कहानियां ऊंचे स्तर का व्यापार एवं वीर सिंह डरपोक बेहद हास्यप्रद थीं। कृपया कार्टूनों को किसी एक पृष्ठ पर प्रकाशित करें।

श्याम माहेश्वरी 'अशोक'—फारबिसगंज

दीवाना के आचार्य रंजनाश वाले अंक ने खूब हंसाया। चिल्ली को तो 'आपने पूरा ही आचार्य रजनीश बना दिया। अन्य स्तम्भों में 'प्रंचतंत्र' की उल्टी शिक्षा 'मोटू-पतलू, पिलपिल-सिलबिल का इन्कलाब जिन्दाबाद, फैंटम आदि पसन्द आए। पिलपिल-सिलबिल तो हर सप्ताह इतना हंसाते हैं कि हंसते-हंसते पेट में बल पड़ जाते हैं। दीवाना फीचर 'विज्ञापनों के लिए उपयुक्त दीवाने सुझाव' बहुत ही अच्छे लगे तथा एक दो-तीन दीवाना फीचर पढ़कर खूब हंसी आई। **दिनेश मटाई—इन्दौर**

अंक १५ मिला, पढ़कर दिल बाग-बाग हो गया। मुखपृष्ठ बड़ा ही रोचक लगा इस बार की पैरोडी सरकारी मेहमान बहुत मजेदार रही, मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल, बन्द करो बकवास, परोपकारी, मदहोश तथा पंचतंत्र बहुत ही पसन्द आये। चना कुरमुरा तो वाकई में ही कुरमुरा होता है।

नरेन्द्र कुमार—हांसी

मुख पृष्ठ पर

कीमत बढ़ी पैट्रोल की
खत्म हुये सब पैसे
दिल्ली काफी दूर है
रास्ता कटे अब कैसे।
खोला टायर कार का
बीच में बैठा चिल्ली
अस्सी मील की स्पीड से
पहुंच गया वो दिल्ली ॥

अंक : २०, ७ जून से १३ जून १६७६ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाहीः २५ रु० वार्षिकः ४८ रु० द्विवार्षिकः ९५ रु०

योगेश संघवी जैन, बेरमो (हजारीबाग)

प्र० : दिलरुबा, निगाहों में अच्छी लगती है या बाहों में ?

उ० : अच्छी लगती दूर से, मटकाती जब नैन,
बाहों में आ जाय तब, बोले कड़वे बैन।

पारसनाथ यादव, जोगेश्वरी—बम्बई-६०

प्र० : चोर, और लोगों के घर चोरी करता है। अपने घर क्यों नहीं करता ?

उ० : अपने घर रहती सदा, पत्नी पहरेदार,
झापड़ मारे गाल पर, चोर करे चीत्कार।

मुनाथा राय बिजुलिया—रामगढ़ कैन्ट (बिहार)

प्र० : किसी महफिल या जलसे में मुझे हंसी आने लगे तो क्या करूं ?

उ० : पशु कोई हंसता नहीं, हंसना मानव धर्म,
हंसी आय, खुल कर हंसो, छोड़ व्यर्थ की शर्म।

अरुण पेरोवाल 'इंसान'—फारबिसगंज

प्र० : यदि किसी की घरवाली बहुत मोटी हो तो ?

उ० : बिछा लीजिए पलंग पर, डनलप गद्दा व्यर्थ,
बनजाए वह ट्रेन में टु टायर की बर्थ।

सतीशचन्द्र सुदर्शी—जबेरा (म० प्र०)

प्र० : काका जी, आपके कितने भतीजे हैं ?

उ० : इधर भतीजे बढ़ रहे, उधर बढ़ रही साख
'दीवाना' को पढ़ रहे, उनकी संख्या लाख।

महावीर सिंह सांगा—अलवर (राज०)

प्र० : आजकल के लड़के, मां से अधिक प्रेमिका को क्यों चाहते हैं ?

उ० : माताजी के प्यार से, अधिक भर गया पेट,
उसे पचाने को करें माशूका से भेंट।

अशोक चावला—पानीपत

प्र० : आपने मैट्रिक की परीक्षा किस तरह से पास की थी ?

उ० : इम्तहान देते समय, नहीं रही थी आस,
लेकिन काका हो गए, ट्रिक से मैट्रिक पास।

अमित अग्रवाल—देवली (टोंक)

प्र० : आप कारतूस छोड़ते हैं। लाइसेंस भी है या नहीं ?

उ० : लाइसेंस हमको मिला, बिना फीस फरियाद,
दीवाना ने दे दिया, चिल्ली जिन्दाबाद।

चन्द्रप्रकाश मित्तल—जगरांव

प्र० : आप जनता पार्टी की तरफ हैं या कांग्रेस पार्टी की ओर ?

उ० : राजनीत की पार्टी हमें न भावे कोइ,
पहुंच जाएं काकी सहित, यदि टी-पार्टी होइ।

राजेश सिनहा— हसरी बाजार

प्र० : आप एक बार में कितने कारतूस छोड़ सकते हैं ?

उ० : प्रश्नोत्तर के वास्ते, मिल जाए जो
कारतूस बनकर उड़े, यत्र तत्र सर्व

संजय जिन्दल— इंदौर (म० प्र०)

प्र० : घर का दरवाजा अन्दर से, दुकान का
हैं तो दिल का दरवाजा ?

उ० : किस दिलवर को किस समय, दिल अपन
खुला राखिए हर समय, चाहे जब

सुरेश खुराना 'पप्पी'—जीन्द

प्र० : प्रेम-इश्क करते हैं वे भी तड़पते हैं, जो
भी तड़पते हैं ऐसा क्यों ?

उ० : लड्डू में मिट्टी भरी, चीनी दई चढ़ाय
खाए सो पछतयागा, ना खाए पछताय

हैदरअली फटाफट वाला—नादेड़ (महाराष्ट्र)

प्र० : पत्थर से सर टकराए तो चोट लगती है,
की मूर्ति के चरणों में सिर क्यों टेकते हैं ?

उ० : द्वेष, क्रोध जिसमें भरा वह पत्थर दे दु
जिसमें श्रद्धा-प्रेम हो, उससे मिलता सुख

राजकुमार 'पराया'—नैपालगंज (नैपाल)

प्र० : कोई फूलों से हमको मारे तो हम उसे किस

उ० : फूल मार स्वीकार कर, मन में धीरज-ध
तिरछी चितवन की उसे, मारो नयन कटा

राजीव डल 'मिक्की'—मुरादाबाद

प्र० : दाढ़ी पर रीझ कर ही आपसे काकी ने शाद

उ० : दाढ़ी थी तब पेट में, मुंह पर उगे न
फिदा हो गई देखकर, चिकने-चुपड़े ग

मो० मून, आजाद बस्ती—रांची

प्र० : दोस्ती, अगर खुदा की देन है तो दुश्मनी ?

उ० : मिलता सच्चा मित्र जब, कृपा करे भग
वैर-भाव या दुश्मनी, अता करे शैत

राजेन्द्र सिंह रावत—मुरादाबाद

प्र० : 'दीवाना' पढ़ कर लड़के दीवाने हो जाते
दीवानी क्यों नहीं होतीं ?

उ० : लड़के निज दीवानगी, सबको देंय दिखाय
दीवानी वे भी बनें, राखें भेद छिपाय

सैयद अनवर ए. डाकोर (गुजरात)

प्र० : 'दीवाना' के मुख पृष्ठ का जो चित्र बनात
कलाकार है ?

उ० : दीवाना को मिल गया, ऐसा चिल्ली
खुद को खुद चित्रित करे, वह आर्टिस्ट वि

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के का
दीवाना साप्ता
८-बी, बहादुरशाह ज
नई दिल्ली-११०

सरदर्द ?
तो लीजिए डाक्टरी खोज का कमाल

सिर्फ़ एक
सेरिडॉन
ट्रेडमार्क 'रोश'

सरदर्द गया फटाफट
तबीयत फिर से चकाचक.

RP. 4407

दीवाना द्वारा सर्वप्रथम रहस्य उद्घाटन

किशोर ने लीना चन्द्रावरकर के साथ चुपके-चुपके सात फेरे फेर लिए?

● **विजय भारद्वाज**

किशोरकुमार को फिल्म उद्योग में हरफन मौला कलाकार के रूप में जाना-पहचाना जाता है। निर्माता, निर्देशक, अभिनेता और संगीतकार किशोर कुमार एक लम्बे समय [illegible] का विषय रहा है। पिछले दिनों योगिता बाली से तलाक हो जाने के बाद किशोर कुमार का नाम कुछ समय के लिए अन्धकार में छिप गया था लेकिन आज फिर एक नये 'स्कूप' के साथ किशोर कुमार फिल्मी और गैर फिल्मी अंचलों में चर्चा का विषय बन गया है। यह नया 'स्कूप' है किशोर और लीना चन्दावरकर का विवाह?

किशोर कुमार और लीना चन्दावरकर का यह विवाह भी उतने ही ड्रामैटिक ढंग से चोरी छिपे हुआ बताते हैं जितना कभी किशोर, योगिता का विवाह हुआ था। स्मरण रहे किशोर ने योगिता बाली से चोरी छिपे आर्य रीति से सात फेरे ले लिये थे और काफी दिनों तक यह खबर गर्म रही थी। बाद में योगिता बाली के परिवार वालों के आग्रह पर यह विवाह विधिवत् सम्पन्न हुआ। लेकिन इन दोनों की गृहस्थ रूपी गाड़ी ज्यादा दिन नहीं चली और योगिता ने महसूस किया कि किशोर कुमार से ज्यादा दिन उसकी बनी नहीं रह सकती। किशोर का स्वभाव अजीबो-गरीब है। कंजूसी में वह सबसे आगे है। जबकि योगिता बाली खुला खर्च करने की आदी है। बहरहाल कुछ भी हो योगिता बाली ने यही कहकर किशोर से तलाक लिया कि वह आदमी जैसी हरकतें नहीं करता और उसकी स्वतन्त्रता में बाधक बनता है। यह तलाक हो जाने के बाद किशोर काफी समय तक नई मछली के शिकार में भटकता रहा। और अब जो मछली इसके कांटे में फंसी है वह है लीना चन्दावरकर। यह किशोर कुमार के जीवन की चौथी (वैध) नारी है। दो-ढाई वर्ष पूर्व लीना चन्दावरकर का विवाह एक करोड़पति सिद्धार्थ बांदोडकर से हुआ था लेकिन भाग्य ने लीना की मांग का सिंदूर इसके विवाह

शेष पृष्ठ ३८ पर

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश
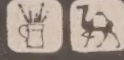
पुरस्कार जीतिए:

कैमल-पहला इनाम	३० रु.
कैमल-दूसरा इनाम	२० रु.
कैमल-तीसरा इनाम	१० रु.
कैमल-आश्वासन इनाम	५
दीवाना-आश्वासन इनाम	५
कैमल-सर्टिफिकेट	१०
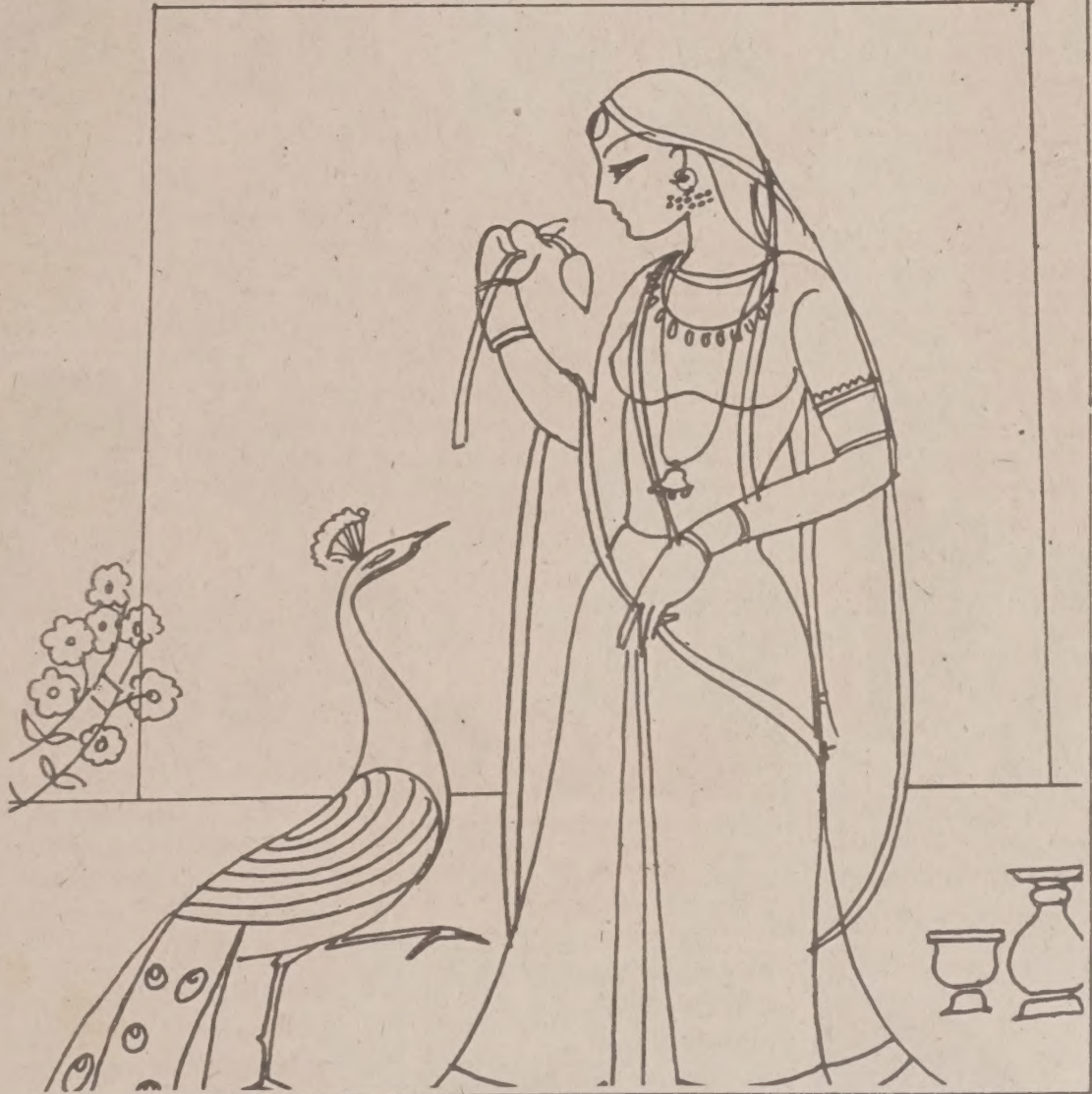
केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२

परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: ९ जुलाई १९७८

CONTEST NO.9

VISION

धरम्या ★ रेखड़ी
अशक्या ★ विनोद मेहऱ्या
रंज्या ★ उत्पल दत्तू
निर उपाए

हमारा हीरो बड़ी हिम्मत करके उस जंगल में पहुँच गया जहाँ वे देश द्रोही जानवरों की खाल और चंदन के पेड़ की स्मगलिंग किया करते हैं। ऑफिस पहुँचते ही उसकी मुलाकात फिल्म की हीरोइन रेखा से हुई।
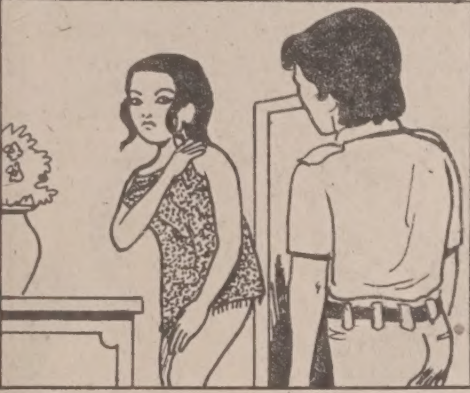
कौन है रे तू? यहाँ अन्दर कैसे आया?
आप को बात करने की तमीज़ नहीं?

मुझे आप जनाब वाले डायलॉग सही तरह बोलने नहीं आते हैं, इसलिए मेरे निर्देशक हमेशा मुझ से तू तड़ाक वाले डायलॉग ही बुलवाते हैं।
ठीक है!
यह बताओ कि इस सरकारी दफ्तर में आप क्या कर रही हैं?

फोटोग्राफ़ी! जंगली जानवरों की!! अगर आप आज्ञा दें तो आपकी भी एक तस्वीर अपने ॲलबम केलिए निकाल लूँ?
मज़ाक मत करो! मेरा गुस्सा बेहद...
साहब, जेकब साहब आ गए हैं।

जेकब, तुम्हें कानून की रक्षा करने केलिए पैसे मिलते हैं, कानून का उल्लंघन करने के लिए नहीं।
ग़लती मेरी नहीं है सर! ग़लती तो उसकी है जिसने कानून का रक्षक समझकर मुझे यहाँ भेजा है। क्या वह जानता नहीं कि मैं हर फिल्म में कानून का उल्लंघन ही करता चला आ रहा हूँ।

तुम्हारा इशारा मोहन सहगल की तरफ़ है? वह अपनी इस फ़िल्म को .... फ़ार्मूले से कुछ हटाकर बनाना चाहता है।
क्या पक पक कर रहे हो मेरे तो कुछ पल्ले नहीं पड़ रहा है।

हर पूर्णिमा की रात को इस जंगल में भूत प्रेत के निकलने की कहानी मशहूर हो चुकी थी।
अरे बाप रे बाप, भूत! अब मैं क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? मैंने तो बेकार यहाँ आकर पंगा ले लिया है।

इन महाशय की ड्यूटी यह है कि वे हर छानबीन करने वाले नौजवान के उपर पहले तो पेट्रोल का डिब्बा उंडेल दें और फिर उसके उपर जलती हुई मशाल फेंक दें। इस तरह कई आदमियों की जानों से यह अपने हाथ धो चुके थे। पर आज धरम्या को देख कर न जाने क्यों वे कुछ असमंजस में पड़ गए।

यह तो फ़िल्म का हीरो लगता है! इसे मार दूंगा तो कहानी आगे कैसे बढ़ेगी? अब तो मुझे अपने आपको कानून के हवाले कर देना चाहिए!

बेटा अपने कारोबार का क्या हालचाल है? सब ठीक चल रहा है न?

एक नया फॉरेस्ट आफिसर धरमेन्दर आया है। उसने हमारे सारे अड्डे का माल पकड़वा दिया है। हमारे पच्चीस आदमियों को गिरफ्तार भी करवा दिया है। बाकी सब तो ठीक ही चल रहा है।

तो तुम ही मेरे मूर्ख पिता की पत्नी हो... मेरा मतलब है मेरी माँ हो?

हां बेटा, मैं ही तेरी बदनसीब.... औंए? नहीं नहीं.... गलत कह गई... शायद किसी दूसरे फ़िल्म का डायलॉग कह गई.... खैर, तो हाँ बेटा मैं ही तुम्हारी माँ हूँ। पर तू इस फ़िल्म में विलेन है, हीरो नहीं।
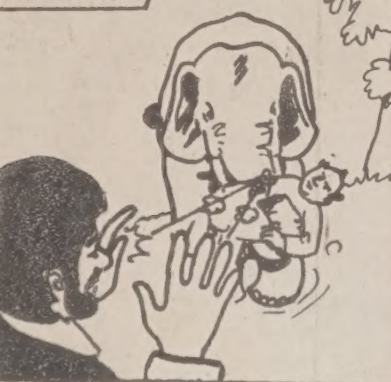
ओहो, भैये, तेरे तो दोनों हाथों पर गोली लगी हुई है। अब मैं क्या करूं? बिछड़े भाई से मिला तो वह भी तब जब बेचारा नर्क जाने की तैयारी कर रहा है!

अरे मेरे लाड़ले बेटे! तुझे इस तरह मरते हुए देख कर शायद मुझे दुख हो रहा है।
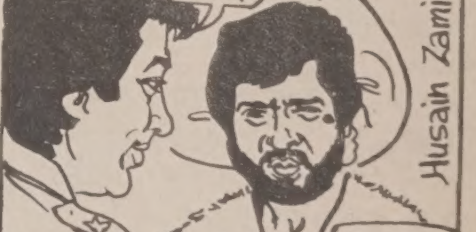
केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

मोतीराम टहलवाणी—जबलपुर : दुनिया में सबसे बड़ा इन्सान कौन है ?

उ० : अब तो कोई इन्सान ही नहीं रहा। बड़े की बात छोड़िये, आज आदमी की हालत उस बन्दर की सी है जिस के हाथ में उस्तरा दे दिया था, तो उसने अपनी नाक काट ली थी।

सुधीर श्रीवास्तव—मुजफ्फरपुर : धन, बल और बुद्धि में से उत्तम कौन है ?

उ० : वह बुद्धि जिसके पास धन और बल हो।

दिनेश जासोरिया—अलवर : एक शायर ने लड़की की पतली कमर के बारे में भगवान से पूछा :

कमर तूने लड़की की पतली बनाई,
मिट्टी थी कम या के रिश्वत है खाई।

आपके पास इसका कोई उत्तर है ?

उ० : भगवान ने सभी कुछ एक जैसा नहीं बनाया है। इसके लिए हमें भी भगवान से शिकायत है :

मुकद्दर किसी का सिकन्दर बनाया,
कलंदर तुम्हें हमको बन्दर बनाया।

बाकी रही मिट्टी की बात, तो जब उसने हमारी श्रीमती जी बनाई तो भगवान के मिट्टी की 'शोर्टेज' हो गई थी, इसे शायरी की जुबान में यूं कह लीजिये :

बनाने लगा जब वह चाची तुम्हारी,
कमर की जगह उसने कमरा बनाया।

उमेशचन्द्र शर्मा—लखनऊ : हमारे प्रश्नों के उत्तर देने में आप चाची की कितनी बात मानते हैं ?

उ० : प्रश्नों के उत्तर देने में तो बिल्कुल नहीं मानते। हां अगर कभी फौज में भर्ती हुए, तो उनकी बात अवश्य मानेंगे। जैसे एक बार लड़ाई के मोर्चे पर एक फौजी अफसर ने फौजी जवान से कहा, 'जवान, तुमने कमाल कर दिया, सात दिन और सात रातों से तुम बराबर मेरे साथ हो, थोड़ी देर के लिये भी तुमने मेरा साथ नहीं छोड़ा,' फौजी जवान ने जवाब दिया, 'जी, बात यह है कि मेरी पत्नी ने मुझ से कहा था, हमेशा अपने अफसर के साथ रहना, क्योंकि लड़ाई में अफसर बहुत कम मारे जाते हैं।

मुहम्मद रज्जाक—पिथौरागढ़ : चाचा जी, मुझे एक्टर बनने का बहुत शौक है, बताइये मैं क्या करूं ?

उ० : एक्टर तो आप जन्म से ही बने हुए हैं, सुना नहीं आपने, 'यह दुनिया एक बहुत बड़ा स्टेज है और इस स्टेज पर हम सभी एक्टर हैं।

सतीन्द्र जैन 'सुदर्शी'—अबेरा : मुझे दीवाना के कुछ पुराने अंक वर्ष ७८ के चाहियें, क्या उपलब्ध हैं ?

उ० : कौन-कौन से अंक चाहिये, उनके नम्बर हमारे एजेन्सी विभाग को लिखिये। दीवाना गर्म-गर्म रोटियों की तरह हाथों हाथ बिक जाता है, इसलिए सभी अंक तो आपको नहीं मिल सकेंगे।
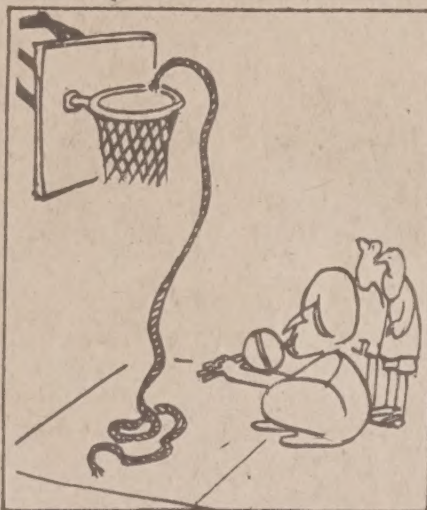
प्रहलाद असवानी—मण्डला : भारत को अब हम सोने की चिड़िया कब कहेंगे ?

उ० : अब ही कह लीजिये। आज क्या कोई भी मन्त्री ऐसा है, जो सोने की ईंटें न बना रहा हो ?

एम० कमाल 'राज'—शिलांग : दूसरों को उन्नति करता देखकर लोग जलते क्यों हैं ?

उ० : क्योंकि खुद उन्नति करने में तो बहुत मेहनत करनी पड़ती है। बहुत कुछ दाव पर लगाना पड़ता है और उन्नति करते देखकर जलने में तो पल्ले की एक माचिस की तीली भी नहीं लगती।

राम अवतार—एटा : आप कभी कोई भलाई का काम भी करते हैं, या केवल बातें ही बनाते हैं ?

उ० : आज ही एक बहुत बड़ा भलाई का काम किया है हमने। सुबह आफिस आते समय हमने देखा, कि एक आदमी बस की लपेट में आकर परे जा पड़ा और बेहोश हो गया। कसूर बस ड्राइवर का नहीं पैदल चलने वाले का। बस किसी खेत में नहीं, सड़क पर चल रही थी पर वह आदमी सड़क पर ऐसे मटक कर चल रहा था, जैसे सड़क पर नहीं कम्पनी बाग में चल रहा हो। बेहोश आदमी के चारों ओर भीड़ जमा हो गई थी। हम भी वहां पहुंच गये। थोड़ी देर बाद उसे होश आया तो आंखें खोल कर उसने मरी सी आवाज में पूछा, 'मैं कहां हूं ?' हमने आव देखा ना ताव, झट से जेब में से दिल्ली की हर जगह का नक्शा निकाल कर उसे दे दिया और बोले, 'इस नक्शे में देख लो, तुम कहां हो और इसे जेब में रख लो। ऐसे ही सड़क पर चलते रहे तो आगे भी काम आयेगा।

अमरजीत सिंह—जालन्धर : चाचा जी, आप हर बात का मतलब उलटा समझते हैं, यह क्या बात है ?

उ० : अपनी-अपनी समझ का फेर है। जो बात एक के लिए उलटी होती है, वह दूसरे के लिए सीधी होती है; जैसे एक बार एक कम्पनी के मालिक ने नौकरी के उम्मीदवार से कहा, 'देखो, अभी तुम्हें चार सौ रुपया मासिक वेतन मिलेगा और एक साल बाद हम आपको सात सौ रुपया मासिक देने लगेंगे।' उम्मीदवार ने कहा, 'ठीक है साहब, तो फिर मैं एक साल बाद काम पर आ जाऊंगा।'

अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : चाचा जी, क्या आपका कभी किसी दुश्मन से पाला पड़ा है ?

उ० : क्या आपने यह शेर नहीं सुना अभी तक :

'हुए तुम दोस्त जिसके दुश्मन उसका
आसमां क्यों हो।'

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

डोले को विदा करके सब चले गए थे लेकिन विनोद वहीं खड़ा रह गया था...घर से लड़की विदा हुई थी इसलिए अपने-अपने स्थान पर सभी उदास थे। घर से अब भी कभी-कभी मां और मासी के रोने की आवाजें आने लगती थीं—ऐसी स्थिति में कौन याद रखता है कि सब ऊपर आ गए हैं—विनोद ने कामिनी की शादी का सारा प्रबन्ध अपने जिम्मे ले रखा था—और उसने यह कार्य बड़ी कुशलता से निभाया—उसकी पहली बहन की शादी थी—और वह खुश था कि उसकी बहन की शादी हो रही है—उसकी बहन का घर आबाद होने जा रहा है—उसने भाग-भाग कर पूरे मन से हर काम किया था—खाना पकवाया था—दहेज निकलवाया और ऊपर के हजारों छोटे-मोटे कार्य उसने बड़े उत्साह से किए थे—इस भाग-दौड़ में राजेश और मोहन ने भी उसकी सहायता की थी—।

बारात आई··· फेरे हुए··· विदाई की तैयारी हुई सब-कुछ हुआ और विनोद खुशी-खुशी देखता रहा···लेकिन जिस समय डोला घर के दरवाजे पर रखा गया तो विनोद के दिल को धक्का-सा लगा···तब उसे ध्यान आया कि इस डोले में कामिनी बैठकर उनके घर से चली जाएगी—कामिनी जो कल तक उसकी बहिन थी···जिसके कारण घर में रौनक थी···जो विनोद से रोज एक-आध चपत खाती थी और चपत खाने के बाद उसे कोसती थी···वही कामिनी आज इस डोले में विदा हो जाएगी···वही कामिनी इस घर के लिए पराई हो जाएगी···वह अब दूसरे मेहमानों के समान कभी-कभार यहां आया करेगी···कामिनी जो उस की बहन है···पिताजी और मां की बेटी है··· वही कामिनी अब किसी की पत्नी बन गई है—पत्नी एक ऐसा रिश्ता है जिसने पिता, मां, भाई और बहनों के सारे रिश्तों को तोड़ दिया···जो दूसरे सब रिश्तों पर छा गया···सबसे ऊंचा हो गया···कैसा अजीब नाता है पति-पत्नी का भी···विनोद ने एक ठंडी सांस लेकर सोचा जिन्होंने लड़की को जन्म दिया··· पाला-पोसा—दुःख सहे···जिनके बीच वह खेली-कूदी···उनसे सदा के लिए बिछुड़ रही है और एक अजनबी जिसने चंद घण्टे पहले सूरत तक नहीं देखी थी···इस समय उसको डोले में बिठा कर ले जा रहा है···मां-बाप, बहन-भाई सब को रोते छोड़ता हुआ—।

विनोद का दिल भर आया···जब डोला विदा होकर चला गया और सब ऊपर आ
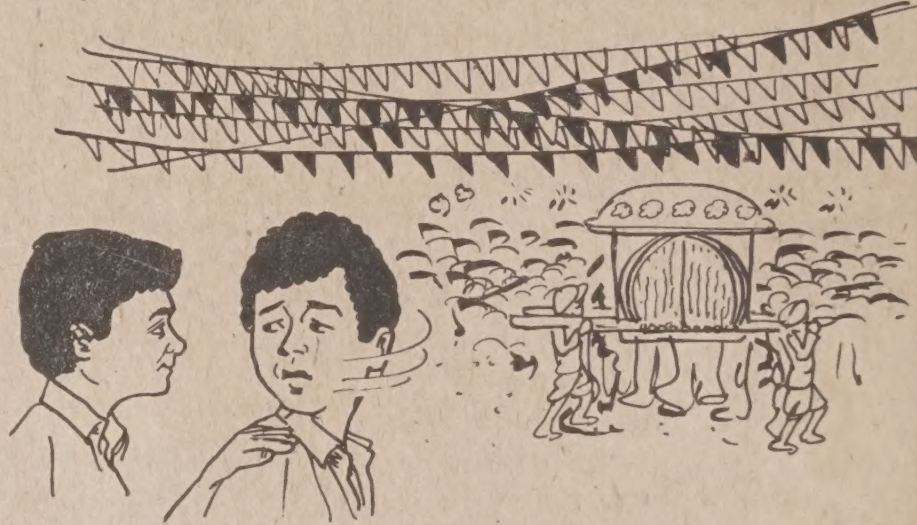
गए तो वह वहीं रुका रह गया···उसकी आंखें गली के उस मोड़ पर थी जहां पर जाकर कामिनी का डोला आंखों से ओझल हो गया था और वह जीवन के 'मोड़' के बारे में सोच रहा था जिस पर पहुंच कर लड़की अपने माता पिता की गोद और बहन-भाइयों से दूर होकर किसी दूसरे की हो जाती है—विनोद के दिल पर एक बोझ-सा था···वह चाहता था कि वह जी भर के रो ले ताकि उसके सीने से यह बोझ हट जाए···लेकिन आंसुओं के स्रोते शायद सूख कर रह गए थे।

'अब घर जाओ—। अचानक किसी ने विनोद के कंधे पर हाथ रखकर कहा।

विनोद चौंक कर मुड़ा···राजेश उसके सामने खड़ा सहानुभूति से उसे देख रहा था। विनोद कुछ देर राजेश को ऐसी दृष्टि से देखता रहा जैसे पहचानने का प्रयत्न कर रहा हो···और फिर विनोद का सिर राजेश के कंधे से लग गया और उसके होंठों से अनायास सिसकियां निकल पड़ी।

'बहन का रिश्ता ही ऐसा होता है—विनोद, राजेश ने उसे समझाने का प्रयत्न किया—'आज नहीं तो कल उसे दूसरे घर जाना था···तुम नौजवान हो···अपना हृदय दृढ़ रखो···जाओ अपने बूढ़े माता-पिता को सांत्वना दो···तुम ही मन छोटा करोगे तो उन्हें कौन समझाएगा।'

विनोद ने सिसकती रोककर आंखें पोंछ लीं···राजेश उसे सहारा देकर दरवाजे तक लाया और विनोद थके-थके कदमों से घर में दाखिल हो गया···घर में आते ही उसका जी चाहा कि वह फूट-फूटकर रोने लगे···वातावरण ही सब कुछ ऐसा उदास-उदास था···तभी तो बड़े बूढ़े कहते हैं कि बेटी की विदाई एक प्रकार से जिन्दा अर्थी की विदाई होती है···घर का वातावरण कुछ ऐसा ही बन जाता है जैसे किसी प्रियजन को सदा के लिए छोड़ कर आए हों—मां की दशा बुरी थी।

दोनों बुआ, मामा, मामी, फूलवती, पद्मा, राधा तथा दूसरी स्त्रियां निरन्तर मां को सांत्वना दिए जा रही थीं···किन्तु मां की सिसकियां रुकने ही में नहीं आती थीं···पिता जी अलग कुर्सी पर बैठे सिसक रहे थे··· विनोद कुछ देर वहीं खड़ा रहा···

धीरे चल मां के पास पहुंच गया···मां ने चुप होकर एकदम विनोद की ग्रोर देखा··· फिर बाहें फैला दीं ग्रौर विनोद मां की गोद में गिर पड़ा···विनोद को लिपटाये हुए बुरी तरह रो रही थी ग्रौर ग्रब विनोद ग्रपने भावों को भी नियन्त्रण में न रख सका···मां से एक बच्चा ग्रलग हो जाए तो दूसरे बच्चे के लिए उसके हृदय में दुगुना प्यार उमड़ ग्राता है—विनोद को छाती से लिपटा कर मां को बड़ी शांति मिली···थोड़ी देर ग्रौर रोकर थककर वह मौन हो गई।

उस रात जब विनोद ग्रपने विस्तर पर लेटा तो उसके मन पर ग्रौर दिनों की ग्रपेक्षा कुछ ग्रधिक बोझ था···वास्तव में पिता जी का बोझ ग्रौर विनोद का बोझ कोई ग्रलग-ग्रलग नहीं थे···हां, विनोद ही यह ग्रनुभव कर रहा था कि उनके मस्तिष्क का भार विनोद के सीने पर बैठता जा रहा था··· पिताजी तो उस भार की ग्रोर से निश्चित लगते थे···उन्हें भविष्य की शायद कोई चिंता ही नहीं थी···ग्रगर ऐसा न होता तो वह ग्रपने सिर पर इतना ऋण बढ़ाते न जाते जबकि ग्रागे कोई रास्ता दिखाई नहीं देता था जिस पर चलकर ऋण चुकाया जा सकता ···ग्रभी छः महीने पहले ही मां ने एक लड़की वीरेन्द्र के लिए पसन्द कर ली है···पिताजी लाख गुस्सा हुए लेकिन मां ग्रपनी बात पर ग्रड़ गईं तो पिताजी को वीरेन्द्र मामा की शादी करनी पड़ी—इस शादी में लाला दीनानाथ के खाते में दो हजार रुपया ग्रौर बढ़ गया लेकिन मां खुश थीं कि नानी की मौत के बाद उन्होंने एक मां बनकर ग्रपने भाई की शादी का कर्तव्य पूरा कर दिया था···उन्हें तो इस बात से कोई मतलब नहीं था कि यह कर्तव्य निभाने के लिये पिताजी को क्या करना पड़ा···स्वयं पिताजी को भी इस बात का एहसास न था···उन्होंने तो लाला दीनानाथ की तिजोरी को ग्रपनी ही तिजोरी समझ रखा था···जब चाहते उसमें से निकाल लेते···चिन्ता तो विनोद को थी।

पिताजी पर धीरे-धीरे बुढ़ापा ग्रपना प्रभाव जमा रहा था ग्रौर ग्रपने भाई-बहिनों में विनोद ही सबसे बड़ा था···पिताजी के सारे उत्तरदायित्व का बोझ ग्रगर किसी के कंधों पर पड़ता तो विनोद ही था···ग्रौर विनोद इसलिये चिन्तित था कि ग्रभी उसको घर का चार्ज नहीं मिला था···लेकिन उसके सामने पिताजी घर के बोझ को इतना बढ़ाए दे रहे थे कि यह बोझ विनोद के कंधों पर पड़ने से तो वह दब ही जाता··· लेकिन पिता जी इन बातों से निश्चिन्त थे···।

लाला दीनानाथ से दो हजार रुपये लिए ग्रभी ग्रधिक समय नहीं हुग्रा था कि कामिनी की शादी में दो हजार ग्रौर लेने पड़े···शायद ग्रौर भी लेने पड़ जाते किन्तु विनोद की मां की दूरदर्शिता काम ग्रा गई थी···उन्होंने कामिनी को दिया जाने वाला बहुत-सा दहेज पहले ही घर में जमा कर रखा था···एक कटोरी तक बाहर से नहीं खरीदनी पड़ी थी···केवल ऊपरी प्रबन्ध के लिए रुपया चाहिए था···

कामिनी के ससुर ने कहा भी कि शादी सादगी से की जाए लेकिन पिताजी की हट के ग्रागे एक न चली···ग्रपनी शान रखने के लिए उन्होंने पूरा दो हजार रुपया बरात के खाने-पीने पर ही फूंक डाला···विनोद कुछ भी तो नहीं कर सका···।

उधर साल भर से मासी का देवर रघु घर पर रह रहा था···खाने-पीने के पचास रुपये निश्चित हुए थे लेकिन विनोद ही जानता था कि नाम केवल खाने-पीने का है लेकिन घर की सब सुख-सुविधायें में रघु समान ग्रधिकारी था···कपड़ों की धुलाई का वह एक पैसा नहीं देता था···तेल, साबुन, पेस्ट वह बड़े ठाठ से विनोद का प्रयोग करता था··· देहाती था इसलिए खुराक भी पूरे तीन ग्रादमियों के बराबर खाता था···इस पर भी मां उसे हाथों-हाथ रखती थीं कि कहीं बहन का दिल मैला न हो जाए···नानी के बाद मां ही तो केवल थीं जो मासी का ध्यान रख सकती थीं···लेकिन उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि बहन भी कभी ग्रपनी दीदी की भलाई सोचती है या नहीं···केवल ग्रपना बोझ दूसरों पर लादे जाना तो रिश्तेदारी नहीं होता···।

इसके ग्रलावा वीरेन्द्र मामा भी शादी के बाद पत्नी समेत वहीं रहा रहा था···कहने को तो वह कहीं नौकर था लेकिन उनकी तनख्वाह कभी ग्राती मालूम नहीं हुई···पिताजी सोचते थे कि रघु पचास रुपये महीना ग्रौर वीरेन्द्र ग्रपनी सारी तनख्वाह मां के हाथ में देते हैं जो घर में व्यय हो जाती है···लेकिन विनोद वास्तविकता को जानता था···वह प्रायः सोचता कि यह मां ग्रौर पिता जी को क्या हो गया है कि इस प्रकार भविष्य से ग्रांखें फेरकर मेहमानों को खिलाया-पिलाया ग्रौर वर्षों तक रखा जाता है···क्या ग्रौलाद से ऐसी लापरवाही बरती जाती है? ग्राज पिताजी ग्रौर मांजी ग्रपने रिश्तेदारों की देखभाल कर रहे हैं···उन पर पैसा खर्च कर रहे हैं ग्रौर ग्रपनी ग्रौलाद के बारे में कुछ भी नहीं सोचते···पांच बच्चों में से केवल एक लड़की की शादी हुई है···वह भी ऋण लेकर···ग्रभी दो लड़कियां बाकी हैं···लड़कों को शिक्षा का बोझ सिर पर है···इन सबके लिए क्या होगा? क्या ग्रासमान से टपकेगा या जमीन उगलेगी···लालाजी की तिजोरी सदा तो नहीं खुलेगी···खुले भी तो किस ग्रास पर जबकि पहले पैसों में से ग्रभी एक पाई नहीं चुकाई लेकिन इन बातों का हल केवल सोच से तो नहीं मिल सकता···लेकिन सोचा न जाए तो फिर क्या किया जाए? इस प्रकार का उत्तर विनोद के पास नहीं था···।

इन्हीं चिंताग्रों में खोए हुए विनोद को नींद ग्रा गई···रातभर वह भयानक सपने देखता रहा···उसने सपने में देखा कि एक भयानक ग्रजगर एक फलदार वृक्ष को निगलने का प्रयत्न कर रहा था···उस फलदार वृक्ष की चोटी पर एक सुन्दर फूल लगा हुग्रा था···उस फूल में सात पखुड़ियां थीं··· उन पंखुड़ियों में मां, पिताजी विनोद ग्रौर दूसरे भाई बहनों के चेहरे झलक रहे थे···

शेष पृष्ठ ३४ पर

सिलबिल पिलपिल
शालिनी ताई

यह शालिनी ताई का अनाथाश्रम है। बेचारी अपंगों, अंधे, बहरे, लूले, लंगड़ों को अपने इस अनाथाश्रम में पनाह देती है। उन्हें काम धंधे सिखाती है और अपने पैरों पर खड़ा होने लायक बनाती है। यहाँ अपंग व्यक्ति दस्तकारी की चीजें और मशीनों पर काम करना सीखते हैं।
पुण्य का काम है भई ?
जब थारी जासूस कम्पनी फेल हो जाये तो तुम्हें भी यहीं आना पड़ेगा।
अनाथाश्रम

इस बेचारे को क्या हो गया ? यह तो अनाथाश्रम का पहरेदार है नीचे गिरा पड़ा है। आजकल गर्मी बहुत है न सन स्ट्रोक यानि गर्दन तोड़ बुखार हो गया होगा।
बाहर गेट पर कूलर भी तो नहीं लगा है। गोरखा लगता है बिचारा। आश्रम वाले तो सारे अन्दर हैं इसलिये किसी को पता नहीं लगा होगा।
पास

चूहे तू इसे पंखा झल। मैं दौड़ कर अन्दर जाता हूं और आश्रम वालों को खबर करता हूं, उनके पास एड का सामान होगा।.

यह क्या हो रहा है, गड़बड़ घोटाला ? संयोग से मेरी नजर अन्दर आश्रम के वर्कशाप में पड़ी, खिडकी खुली है। शायद बिजली चली गयी है, वर्ना यह इस तरह खिड़की खुली न छोड़ते। तो यह आश्रम एक धोखे की टट्टी है।
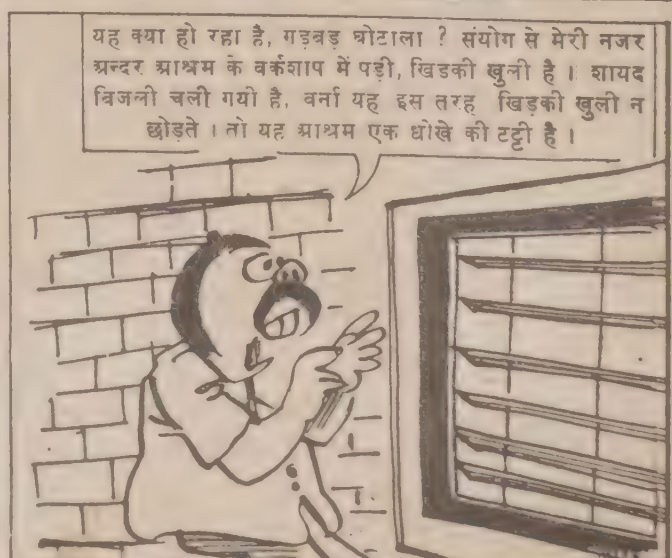
हमें कौन रोकता ? आपके पहरेदार को गर्दन तोड़ बुखार हो गया है ।

तुम्हें अन्दर किसने आने दिया ? तुम कौन हो ? पहरेदार ने तुम्हें रोका नहीं ? तुम्हें पता नहीं है कि बगैर अनुमति लिये आश्रम में आना मना है ?

लगता है तुमने अन्दर का सारा नजारा देख लिया है । अब तुम्हें यहाँ से जिन्दा बाहर नहीं जाने दिया जायेगा । हाँ तुमने ठीक ही देखा मरने जा ही रहे हो तो सुन लो । हम आश्रम की आड़ में नकली नोट छापते हैं । गूंगों और अंधों को हम इसीलिये पनाह देते हैं कि वह काम करते हैं लेकिन देख बोल नहीं सकते । शिकायत नहीं कर सकते हमारे लिये जोखिम साबित नहीं होते ।
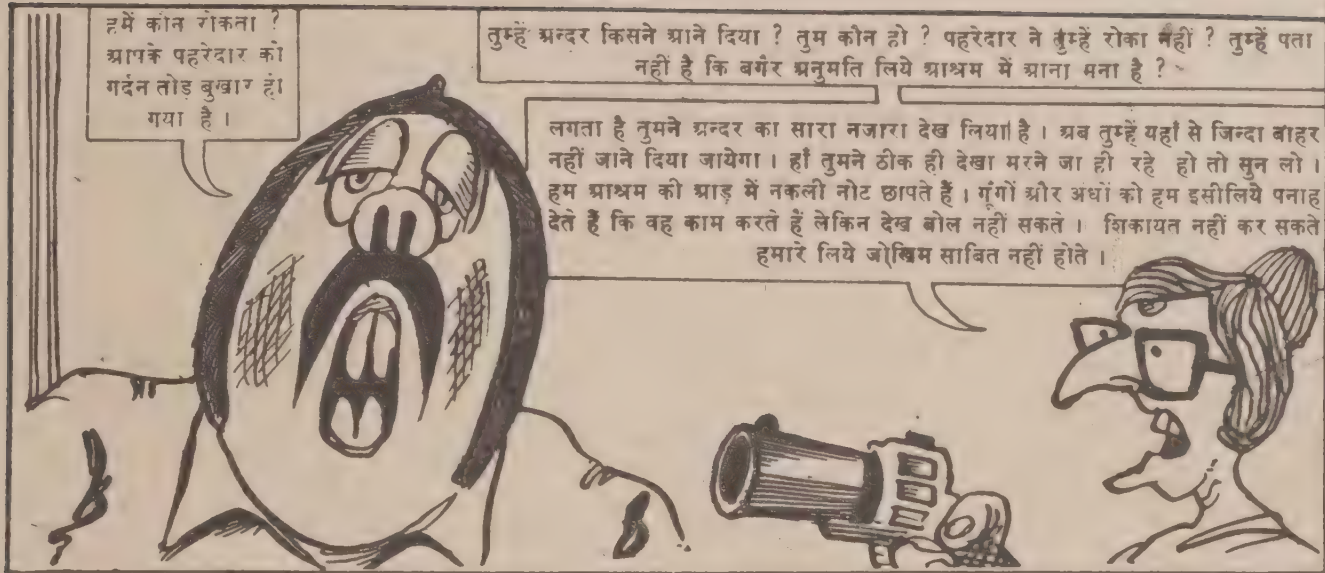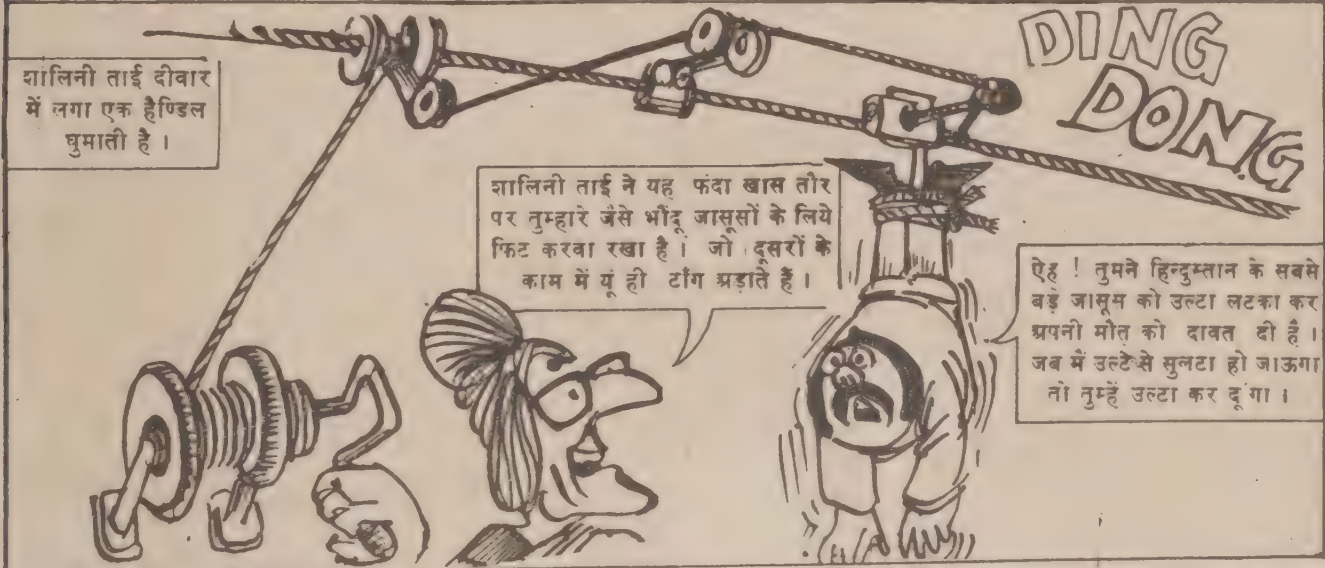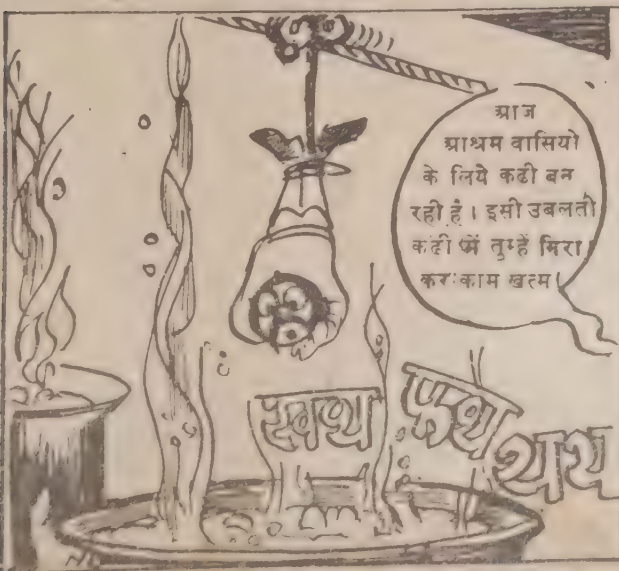
क्या यह ए-वन जासूस का
अन्त है ?

बिल्कुल नहीं ! हिन्दी फिल्मों के हीरो और कामिक स्टोरियों के हीरो कभी नहीं मरतें, वह अजर अमर होते हैं । मौत के मुंह में जाते-जाते ऐसी कलाबाजी खाकर बच निकलते हैं कि···

ए-वन जासूस ने अपने शरीर को ऐसे मोडा कि वह कढ़ी में जा गिरने की बजाय
पतीले के कोने से टकरा कर दोबारा हवा में उछला और ३५ अंश का कोण बनाते हुए···
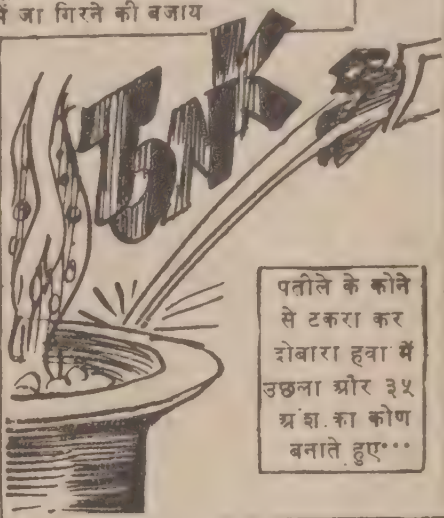
शालिनी ताई की झाड़ू बनाने की मशीन
सबसे पहले तो मुझे यहां से बच निकलने की योजना बनानी हैं ।

योजना बड़ी सफाई से बनानी पडेगी ।

किसी हालत में मुझे जल्दबाजी से काम नहीं लेना है ।
शालिनी ताई की झाकरी बनाने की मशीन

सब्र का प्याला टूटना नहीं चाहिए ।
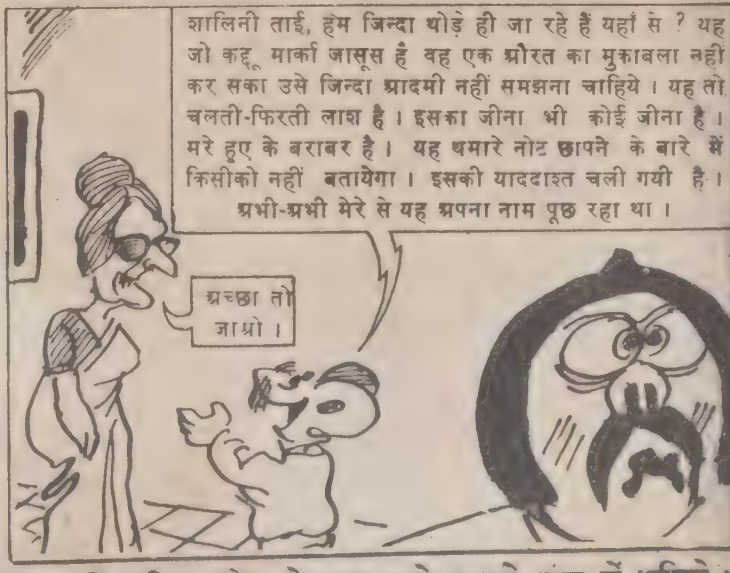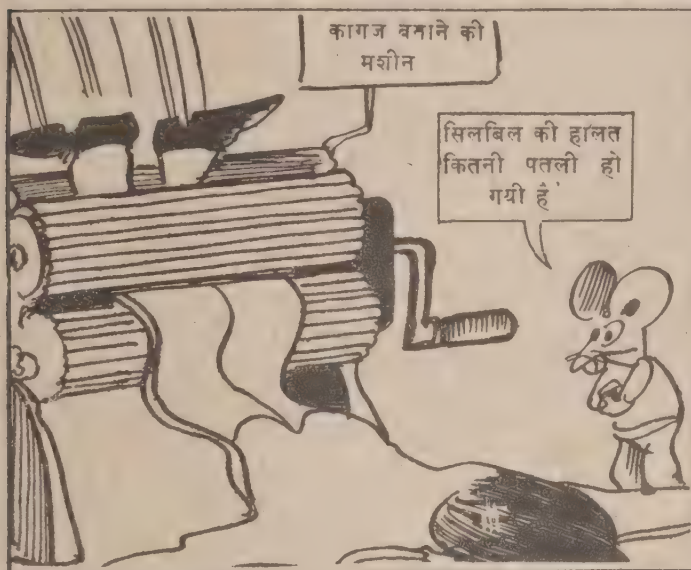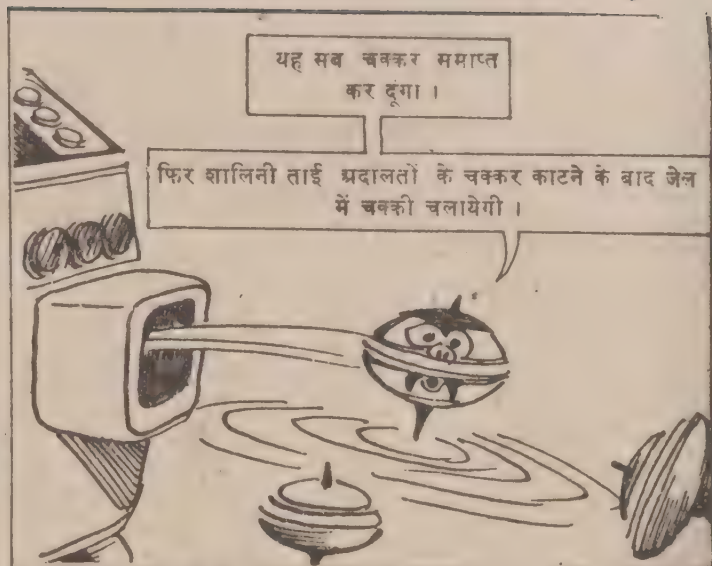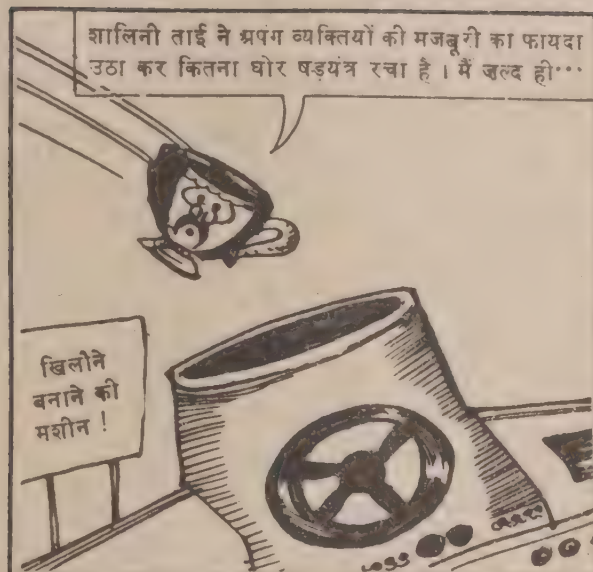
पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये ।

५ रुपये जीतिये

रचेल कारसन समुद्री जीव विज्ञान शास्त्री हैं।

एक बार वह समुद्री जीवों पर प्रयोगशाला में अध्ययन कर रही थीं। ज्वार आने के कारण बने पानी के छोटे-छोटे तालों में से वह पानी की थोड़ी सी मात्रा ले आतीं और सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा उस पानी में उपस्थित समुद्री सूक्ष्म जीवों का अध्ययन करतीं। अध्ययन समाप्त होने पर वह उस पानी को दोबारा जाकर समुद्र में डाल देतीं ताकि उसमें विद्यमान जीव न मर जायें।

एक बार एक व्यक्ति ने उन्हें टोका, 'आप चम्मच भर पानी वापिस समुद्र में न डालें तो कौन सी आफत आयेगी? क्या समुद्र का पानी घट जायेगा?'

कारसन मुस्करायीं और बोलीं, 'अभी तो आपको यह नहीं पता कि मैं और क्या करती हूं। ज्वार की जिस स्थिति से मैं उन जीवों को ले आती हूं उसी स्थिति में वापिस करती हूं ताकि उनके जीवन में गड़बड़ न हो। ज्वार के उस स्तर को पकड़ने के लिए कभी-२ मुझे रात को घड़ी में एलार्म देकर रखना पड़ता है. मैं रात को ही उठ कपड़े पहन टार्च लेकर जाती हूं चाहे वर्षा भी हो रही हो।'

उस व्यक्ति ने मन में सोचा होगा कि यह वैज्ञानिक भी अजीब सनकी जीव होते हैं।

सारांश———————

अन्तिम तिथि— १६ जून १९७९

पता: दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

शीतल बिटिया

—प्रो० शान्ति स्वरूप 'हंसमुख',

नन्हीं नाजुक नट-खट निर्मल, ठुमक ठुमक पग रखती चंचल
सपने सी सुन्दर सतरंगी, मनमोहक शबनम सी शीतल ॥

मुस्काती गाती गुड़िया सी
जादू की छोटी पुड़िया सी
बातों में नानी बुढ़िया सी
इन्द्रधनुष सी जगमग शीतल

नन्हीं परियों की रानी सी
अनजाने जग में जानी सी
दो हृदयों की एक वाणी सी
दो 'नदियों की धारा शीतल।

'हंसमुख' की कविता से 'हंसमुख'
देखे चांद गगन का छुप छुप
न्यौछावर तेरे बचपन पर
मेरी शत-शत कविता शीतल।

झर-झर झड़ते छन्द पलक से
बिखरें गजलें श्याम अलक से
बहता सुर-संगीत छलक के
मुखरित कविता काया शीतल।

छाया क्षणभंगुर जीवन की
माया, लघु नन्दन-कानन की
मरुभूमि में तपते मन की
तू ही 'केवल' 'आशा' 'शीतल'।

मां की ममता, प्यार पिता का
घर-आंगन की शोभा शीतल
क्या लिक्खूं मैं कविता तुझ पर
तू तो है खुद कविता शीतल।

● एक व्यापारी से उसके पुत्र ने 'ईमानदारी' की व्याख्या करने को कहा। व्यापारी बोला, 'बेटा ईमानदारी की व्याख्या करना मुश्किल है। लोगों के अपने-अपने विचार हैं। मैं तो यही कहूंगा कि मान लो तुम किसी ग्राहक का चैक कैश कराने बैंक जाते हो वहां सौ रुपए की जगह कैशियर गलती से तुम्हें एक सौ दस रुपए दे देता है। अगर तुम उन दस रुपयों में से पांच रुपए अपने हिस्सेदार को दो तो मैं उसे ईमानदारी कहूंगा।'

मोटू पतलू
की कागज पर बनी
रंगीन फिलम
गद्दार

पहला सीन : कशमीर की घाटियां जहां एक अंधेरी गुफा में डाकुग्रों के छुपने का ठिकाना है ।

कैप्टन ग्रशोक पर हमने ग्रभी हाथ भी नहीं डाला था, कि पुलिस से मुठभेड़ हो गई । हमारे दो साथी मारे गये ग्रौर

एक बुरी तरह घायल हो गया । समझ में नहीं ग्राता, पुलिस को हमारी कारवाई के बारे में सूचना किसने दी ?

हरिया ने दी होगी । हमारे कुछ साथियों को ग्रपने साथ मिला कर उसने ग्रपना ग्रलग गैंग बना लिया है । ग्रौर हमें समाप्त करने की धमकी दी है । ग्रब हमें दोहरी लड़ाई लड़नी पड़ रही है । हरिया के गैंग से ग्रौर पुलिस से ।
दोनों को देख लेंगे ग्रौर हरिया को झींगर की तरह मसल देंगे । भीम सिंह से टक्कर लेना पहाड़ से सर टकराने के बराबर है ।
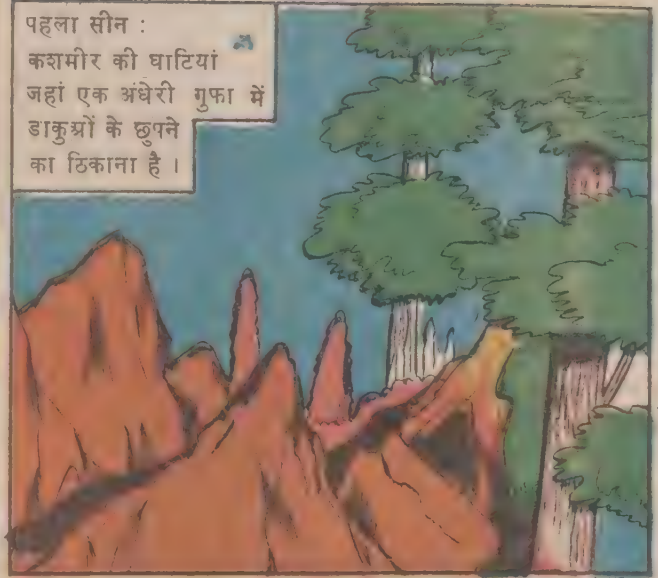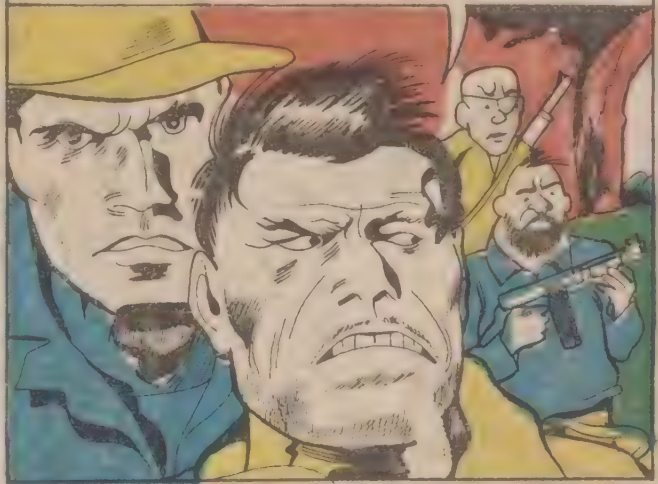
पाकिस्तान से हमें बार-बार कैप्टन ग्रशोक को काबू में करने के ग्रादेश मिल रहे हैं ।
के होते, जीवन में दिन कभी नहीं देख सकता ।
हो सकता है हरिया ने भी पाकिस्तानी गैंग से सम्पर्क बना लिया हो । उसने हमसे पहले कैप्टन ग्रशोक पर हाथ डाल दिया तो हम पीछे रह जाएंगे ।

अब हमारा पहला काम है शंकर की चिंता करना। इसके इतनी गोलियां लगी हैं कि इसकी जान खतरे में है। गोलियां जल्द न निकाली गईं तो सारे शरीर में जहर फैल जाएगा।

इसे हम अस्पताल नहीं ले जा सकते। किसी डाक्टर को उठा कर यहां लाना होगा।
किसी लोकल डाक्टर को लाना अपनी जगह का पता बताना है।
इसके लिये शहर जाकर दिल्ली फोन करो।

सीन न० २ : एक पब्लिक टेलिफोन बूथ।
नाम बदल कर कोड में बात करना। ताकि पुलिस बीच में ट्रेस भी करले तो हमारा पता न लगा पाये।
हैलो बख्शी, मैं श्रीनगर से भूप सैन बोल रहा हूं।
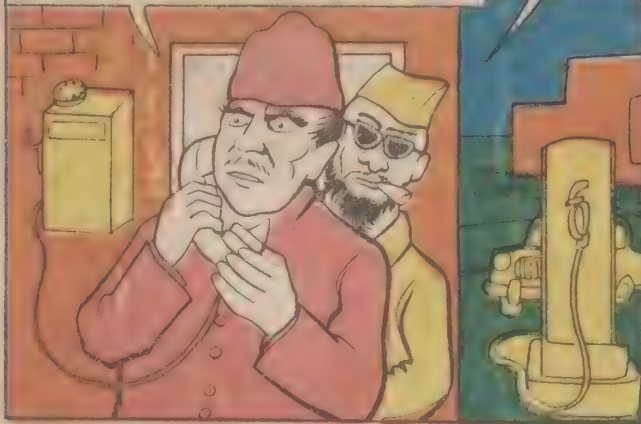
सीन न० ३ : दिल्ली में गैंग का खुफिया अड्डा।
कौन ? भीम सिंह म···म···मतलब है भूप सैन ? हां हां समझ गया मैं।

क्या कहा ? कैप्टन अशोक···मतलब है फिल्म स्टार अशोक कुमार कहां है ? वह दिल्ली नहीं पहुंचा। हम उसके परिवार पर नजर रखे हुए हैं, वह लोग उसके दिल्ली न लौटने पर चिन्तित है। यहां पहुंचा तो तुम्हें सूचना दूंगा। हां···समझ गया।

क्या कहा ? दो मुन्ने पांव फिसलने से मर गये ? एक छोटे मुन्ने के चोट आई है ? दिल्ली का कोई अच्छा डाक्टर चाहिए ? आपरेशन के औजारों समेत ? हाँ हाँ, मैं डाक्टर लेकर खुद आ रहा हूं, फटाफट।
?

हमारे दो साथी मारे गये, एक बुरी तरह घायल हुआ है । तुम जीप निकालो । हमें तुरन्त ही किसी डाक्टर का अपहरण करके उसे अपने साथ ले जाना है ।

सीन नं॰ ४ : डाक्टर झटका का क्लीनिक ।
डाक्टर झटका उस समय अन्दर के कमरे में अपनी नई सैक्रेटरी शोभा के साथ कुछ नई दवाओं के फार्मूले टाइप करवा रहे थे ।

बाहर के कमरे में मोटू दवाओं की टेबल पर बैठा दीवाना पढ़ रहा था ।
दीवाना
डा॰ झटका
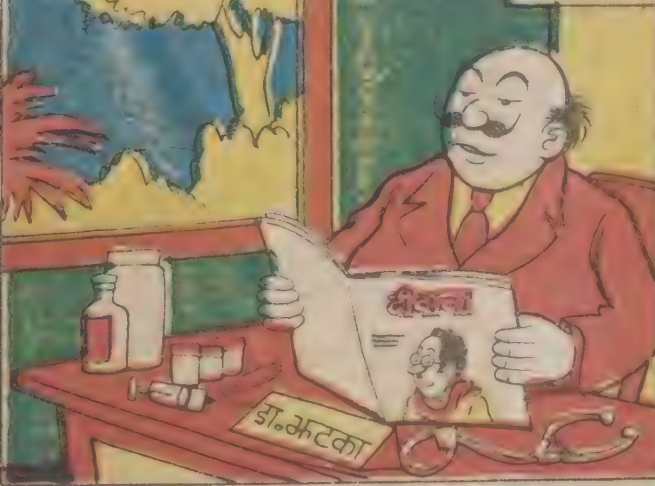
तभी खिड़की से बाहर दो खतरनाक आँखों ने अन्दर झांका ।
दीवाना

फिर एक आटोमैटिक गन ऊपर उठी ।
दीवाना

साइलेंसर लगी गन में हल्की सी आवाज हुई और एक गोली दीवाना के आर-पार हो गई ।
दीवाना

एक शब्द भी मुंह से निकाला, तो गोली सर के पार होगी ।
यह क्या चक्कर है ?
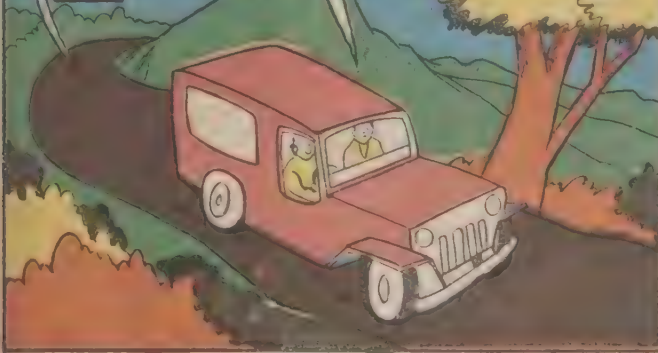
कागज पर लिखो, मैं अपनी मर्जी से और खास काम से बाहर जा रहा हूं, कोई मुझे ढूंढ़ने की कोशिश न करे ।
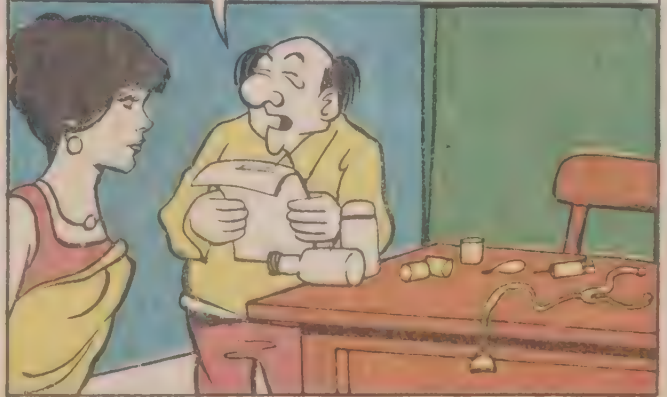
कोई मुझे ढूंढ़ने की कोशिश न करे, लिख दिया ।
नीचे लिखो, डाक्टर झटका ।
डाक्टर झटका ? क्या मतलब ?
डा.झटका

बको नहीं ! नहीं तो गोली सर से पार होगी ।

इसके बाद गैंग वाले ने मोटू के हाथ पांव बांधे । आपरेशन के औजारों का बक्स साथ लिया और खिड़की से कूद कर बाहर आ गया । पास ही उसका साथी जीप में उनका इन्तजार कर रहा था ।
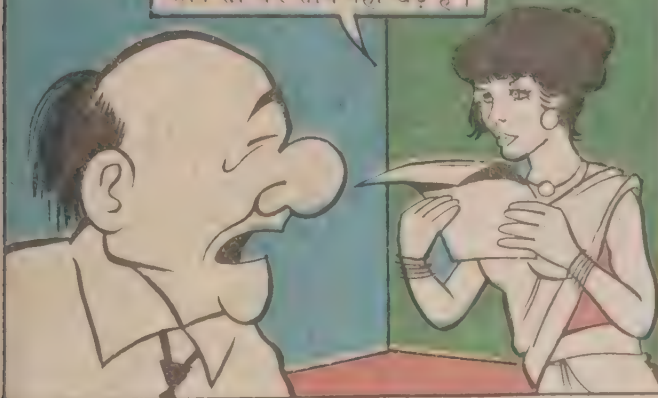
क्या बात है डाक्टर ? क्या कोई खास परेशानी है ?

मैं अपनी परेशानी क्या बताऊँ ? मैं तो यहाँ हूं ही नहीं। मैं तो किसी खास काम से बाहर गया हुआ हूं।

क्या चक्कर है ? क्या लिखा है इस कागज पर ?
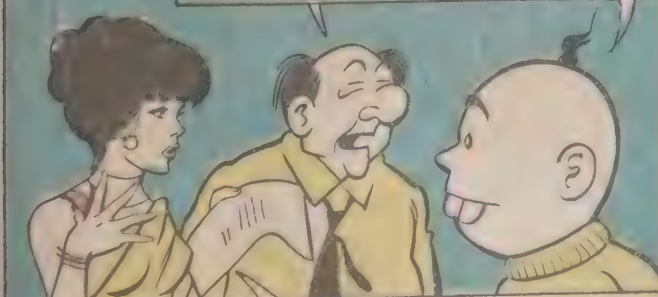
मैं अपनी मर्जी से और खास काम से बाहर जा रहा हूं। कोई मुझे ढूंढने को कोशिश न करे। डाक्टर झटका।

और कमाल यह है कि मुझे कोई खास काम नहीं। मैं कहीं गया नहीं। यहां मौजूद हूं।

और यह हस्ताक्षर आपके नहीं हैं।

बिल्कुल नहीं हैं। मैने यह पत्र लिखा नहीं।

इसका मतलब है, यह पत्र किसी और ने लिखा है। पर किसी और ने ऐसा क्यों किया ?
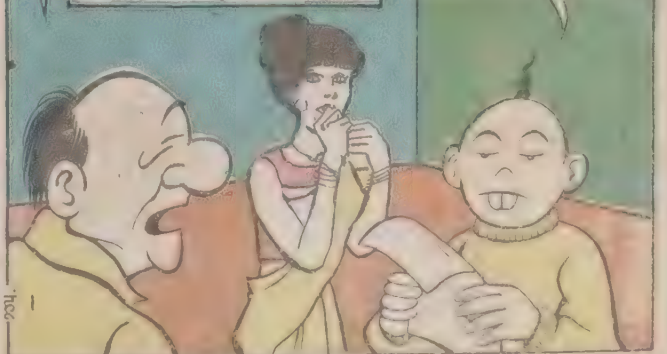
तभी दरवाजा खुला और शोभा वहाँ अपने अंकल को देख कर दंग रह गई।
सीमा और अशोक अब तक श्रीनगर से नहीं लौटे शोभा। अब तो मुझे बहुत चिंता होने लगी है।

सीमा और अशोक कौन हैं।
सीमा मेरी बहन है। दस दिन पहले उसका विवाह कैप्टन अशोक से हुआ था। वे हनीमून के लिए श्रीनगर गये हुए हैं। उन्हें तो तीन दिन पहले यहाँ पहुंच जाना चाहिये था। यही प्रोग्राम बना था।

मैंने श्रीनगर रेस्ट हाउस में फोन किया था। वहां से पता चला है कि सीमा और अशोक तीन दिन पहले वहाँ से चल पड़े थे।

फिर रास्ते में कहाँ रह गये ? उन्हें तो रास्ते में कहीं भी नहीं रुकना था। अशोक की छुट्टियां कल की समाप्त हो चुकी हैं।
इसी बात की चिंता है। आजकल विदेशी जासूसों ने हमारे कई मिल्ट्री अफसरों पर जाल फेंका हुआ है।

पुलिस में रिपोर्ट करें ?
नहीं। पुलिस में रिपोर्ट करना ठीक नहीं रहेगा। इससे अशोक की सीक्रेट् फाईल और उसकी सर्विस पर बुरा असर पड़ेगा। मैं अपने मित्र विक्रम को साथ लाया हूं। यह प्राईवेट डिटैक्टिव हैं। यह अपने तौर पर छानबीन करके पता लगायेंगे, कि इस केस की तह में क्या है।

डिटैक्टिव तो मैं भी हूं और वास्तव में यह केस ऐसा लग रहा है कि कोई होशियार डिटैक्टिव ही इसे सावधानी से हैंडल कर सकता है।

मैं अपनी मर्जी से और खास काम से बाहर जा रहा हूं। कोई मुझे ढूंढ़ने की कोशिश न करे। डाक्टर झटका।

पर उसने अपने को डाक्टर झटका क्यों लिखा ? मतलब है, उससे जबरदस्ती किसी ने ऐसा लिखवाया । जबरदस्ती का मतलब यह हुआ कि उसका अपहरण किया गया है । यह केस तो कैप्टन अशोक और सीमा की गुमशुदगी जैसा है गम्भीर बन गया ।

उधर मोटू एक हैलिकाप्टर में बैठ कर अब तक गंग के ठिकाने पर पहुंचा दिया गया था ।

गर्दन का आप्रेशन तो करोगे ही तुम । इसके इतनी गोलियां लगी हैं कि छुरी की बजाय इसके गुलाब की पत्ती लगाऊं तब भी उसकी जान निकल जायेगी ।

इस तूफानी कहानी के अगले खतरनाक मोड़ आगामी अंक में देखिये ।

भारतीय क्रिकेट के कप्तान वैंकटराघवन

इंगलैंड जाने वाली भारतीय क्रिकेट टीम के लिये वेंकट कप्तान हैं। वही विश्व कप मेचों के भी कप्तान होंगे। टैस्ट मैचों में वेंकट के जीवन में कई उतार चढ़ाव आये। कई बार टैस्ट टीमों में आये फिर बाहर हुये और फिर आये। यही आंखमिचौली वर्षों चलती रही और अब अंत में वेंकट को वह स्थान मिल ही गया जिसके वह अधिकारी थे।

न्यूजीलेंड के विरुद्ध १९६५ में चंद्रशेखर के बीमार होने पर वेंकट को टैस्ट खेलने का पहला अवसर मिला। इस अवसर का वेंकट ने बहुत अच्छा फायदा उठाया और शृंखला में २१ विकेटें लेकर दोनों ओर से सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी का श्रेय प्राप्त किया।

वेंकट ऑफ स्पिनर होने के साथ-साथ बहुत श्रेष्ठ फील्डर भी हैं वेंकट को वाडेकर के बाद ही कप्तानी प्राप्त हो जाती परन्तु दूसरे ऑफ स्पिनर प्रसन्ना के साथ प्रतियोगिता के कारण ऐसा न हो सका। वेंकट की गेंदबाजी की प्रशंसा क्रिकेट के बादशाह गैरी सोबर्स ने भी मुक्त कंठ से की है। सोबर्स ने तो एक बार यहां तक कहा कि तुम मुझे एक वेंकट दो मैं दुनिया की किसी भी टीम को पीट दूंगा।

वेंकट को अजीब स्थितियों का भी सामना करना पड़ा। एक सीरीज में वह उपकप्तान होते तो दूसरी ही सीरीज में टीम से बाहर होते। लेकिन ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण बातें वेंकट का मनोबल नहीं तोड़ सकीं।

वैंकट ने धैर्य का सहारा लिया। उन्होंने वाडेकर से पटौदी को कप्तानी लेते देखा। फिर कप्तानी का सेहरा बेदी के सिर बंधा। उसके बाद गावस्कर की बारी आयी। १९७८-७९ का सीजन हमारे तीन स्पिनरों प्रसन्ना, बेदी तथा चन्द्रशेखर के लिए बहुत क्रूर रहा, जिसने तीनों की प्रतिष्ठा को लगभग नष्ट ही कर दिया। परन्तु इस क्रूर सीजन से भी वेंकट भारत के मुख्य स्पिन आक्रमण के आधार बनकर निकले।

३४ वर्षीय वेंकट ने अब तक १३३ विकेटें ली हैं। वेंकट की चतुर कप्तानी के कारण ही देवधर ट्रॉफी उत्तर क्षेत्र के हाथ से छिन गयी। आशा है कि इंगलैंड सीरीज और विश्वकप में भी उनकी कप्तानी चमक कर सामने आयेगी।
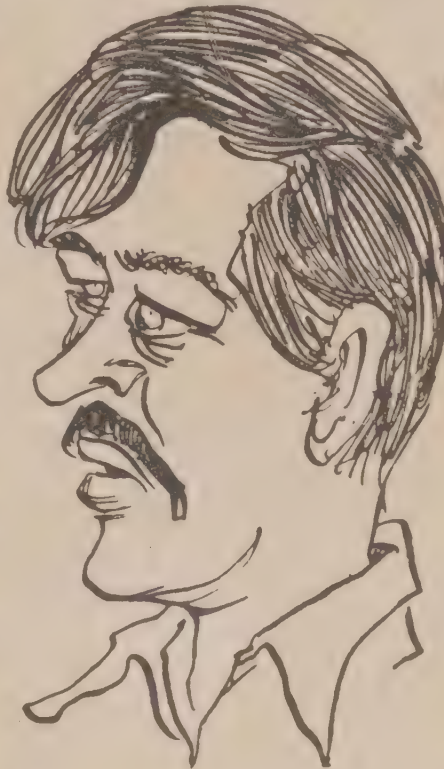
टैस्ट क्रिकेट—पूरा लेखा-जोखा

मार्च १९७९ में पाकिस्तान ने जब मेलबोर्न में आस्ट्रेलिया के साथ टैस्ट मैच खेला तो पाकिस्तान का वह सौवां टैस्ट मैच था इसके साथ ही विश्व के सभी टैस्ट मैच खेलने वाले देश १०० टैस्ट या अधिक खेलने वाले बन गये। पाकिस्तान ने अपना सौवां टैस्ट मैच सरफराज नवाज की शानदार गेंदबाजी के बल पर जीत लिया।

भारत ने अपना सौवां टैस्ट मैच बर्मिंघम में इंगलैंड के विरुद्ध खेला, इसमें भारत ने अपने चारों स्पिनर मैदान में उतारे परन्तु भारत यह टैस्ट १३२ रनों से हार गया। (१३ जुलाई १९६७)। मार्च-१९६५ में वेस्टइंडीज ने अपना सौवां टैस्ट आस्ट्रेलिया के विरुद्ध किंगस्टन जैनेवा में खेला। वेस्टइंडीज १७९ रनों से जीता।

न्यूजीलेंड का सौवां टैस्ट मार्च १९७२ को ब्रिजटाऊन बारबेडोस में वेस्टइंडीज के साथ हुआ। टैस्ट ड्रॉ रहा।

दक्षिण अफ्रीका ने सौवां टैस्ट मार्च १९४९ को पोर्टएलिजाबेथ (द० अफ्रीका) में इंगलैंड के विरुद्ध जीत लिया तीन विकेटों से।

इंगलैंड और आस्ट्रेलिया के सौवों की सूची लम्बी है इंगलैंड ने सौवां टैस्ट जुलाई १९०० में हैडिंग्ले में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेला। आस्ट्रेलिया यह टैस्ट १२६ रनों से जीत गया इंगलैंड ने २०० वां टैस्ट मार्च १९३३ को न्यूजीलेंड के विरुद्ध ऑकलेंड में खेला। टैस्ट ड्रॉ रहा।

इंगलैंड का ३००वां टैस्ट अगस्त १९५२ को ओवल में भारत के विरुद्ध खेला गया! वर्षा के कारण टैस्ट ड्रॉ रहा।

इंगलैंड का ४००वां टैस्ट जनवरी १९६४ के भारत के ही विरुद्ध मद्रास में हुआ। यह टैस्ट भी ड्रॉ रहा।

इंगलैंड का ५०० वां टैस्ट पाकिस्तान के विरुद्ध लीडस में जून १९६८ को खेला गया। टैस्ट ड्रॉ रहा।

आस्ट्रेलिया ने अपना सौवां टैस्ट २७ मई १९१२ में आरम्भ किया और दूसरे ही दिन दक्षिण अफ्रीका को एक पारी से हरा कर दो ही दिन में अपना सौवां टैस्ट मैच पूरा किया। यह मैच ओल्ड ट्रैफर्ड मनचैस्टर में हुआ।

आस्ट्रेलिया का दो सौवां टैस्ट मैच नवम्बर १९५१ में वेस्टइंडीज के विरुद्ध सिडनी में खेला और सात विकेटों से विजय प्राप्त की।

आस्ट्रेलिया का तीन सौवां टैस्ट मैच जून १९६८ में इंगलैंड के विरुद्ध ओल्ड ट्रैफर्ड में खेला और १५० रनों से जीता।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

जूडो कैराटे कैसे सीखें?

पैरों को मजबूत कैसे बनायें

पैरों को कठोर व मजबूत बनाने के लिए किसी विशेष उपकरण की जरूरत नहीं है। इसके अभ्यास के लिए एक लकड़ी की गोल बल्ली जिसकी ऊंचाई लगभग साढ़े छह या सात फुट हो—लेकिन जमीन में गहराई तक मजबूती से गाड़ दीजिए। फिर पुरानी गद्दियों या तकियों को तीन जगहों पर भिन्न-भिन्न ऊंचाई पर कसकर बल्ली के चारों ओर लपेटकर बांध दीजिए। पहला तकिया अपने घुटनों की ऊंचाई तक बांधिए। दूसरा पेट की ऊंचाई तक तथा तीसरा तकिया अपनी गर्दन या मुंह तक की ऊंचाई लेकर बांध दीजिए।

अब बल्ली पर विभिन्न ऊंचाइयों पर बंधे तकियों पर पैर की ठोकर मारकर अभ्यास कीजिए। सबसे नीचे बंधे तकिये पर पैर के तलवे का उंगलियों के पास वाला गद्दीदार भाग का प्रहार कीजिए। फिर खम्भे की तरफ पीठ कर के पैर को पीछे फेंकते हुए प्रहार कीजिए।

पेट की ऊंचाई तक बंधे तकिये पर अपने पैर के घुटनों का प्रहार कीजिए। १५-२० बार दायें घुटने तथा इतनी ही बार बायें घुटने से प्रहार कीजिए। गति और संख्या धीरे-धीरे बढ़ाते रहिये। तेज गति बढ़ाने से आपके पैरों में फुर्ती का संचार होगा और संख्या बढ़ाने से मजबूती व ठोसपन पैदा होगा। तेज गति बढ़ाने के लिए बेहतर है कि आप घड़ी में देखें कि १ मिनट में आप कितने प्रहार कर सकते हैं—।

अब मुंह तक ऊंचे तकिए पर पैर को झुलाते हुए ऊंचा उठाइए और पैर के तलवे का प्रहार तकिए पर कीजिए। याद रखिए पैर को उस ऊंचाई तक ले जाने का अभ्यास धीरे-धीरे कीजिए। झटके से एकदम पैर ऊंचा कर देने से आप गिर भी सकते हैं। इसलिए धीरे-धीरे प्रयत्न करना ही ठीक है

इसी प्रकार इस खम्भे पर मुक्के कोहिनी और हथेली के किनारे का प्रहार करके हाथों का अभ्यास भी किया जा सकता है।

अब कैराटे खेलते समय शरीर की स्थिति और दावपेंचों के बारे में हम आपको आगे के अध्यायों में बतलायेंगे।

लड़ते समय आपके शरीर की स्थिति

यों तो हरेक खेल में पूर्णतया दक्ष होने के लिए शरीर की स्थिति का खास ध्यान रखा जाता है ताकि खेलते समय शरीर को किसी प्रकार की आकस्मिक चोट न सहन करनी पड़े। दूसरे, शरीर की स्थिति और खेलने का सही ढंग जानने से शरीर पर किसी तरह का विपरीत प्रभाव भी नहीं पड़ता और शरीर आकर्षक भी लगता है। यदि लड़ाई या खेल के समय शरीर को व्यवस्थित रूप से काबू में न रखा जाए तो हार के ज्यादा मोके होते हैं। इसीलिए कैराटे में शरीर की स्थिति को नियंत्रण में रखना बहुत जरूरी है। तभी आप विरोधी का डटकर सही रूप से सामना कर सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

हार्स पोजीशन

शरीर की इस स्थिति से खड़े रहने पर विरोधी को किसी प्रकार का शक भी नहीं होता और आप किसी भी आक्रमण के लिए तैयार भी रहते हैं। खड़े होने की इस स्थिति से आप दोनों काम आसानी से कर सकते हैं। यदि विरोधी आक्रमण कर दे तो उससे अपना बचाव भी कर सकते हैं और यदि आप स्वयं विरोधी पर आक्रमण करना चाहें तो वह भी सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

इस स्थिति में शरीर को बिल्कुल सीधा रखिए। दोनों पैरों के बीच की दूरी कम से कम डेढ़ फुट के लगभग होनी चाहिए और आपका दायां पैर थोड़ा आगे निकला होना चाहिए। आपका दायां हाथ कोहनी से मुड़कर आपके पेट के पास होना चाहिए। और हथेली खुली होनी चाहिए। बाएं हाथ से आप दाएं हाथ को उंगलियों के पास से पकड़ लें। फिर बाएं हाथ से हथेली पीछे की ओर खींचें। लेकिन दाएं हाथ को पीछे न खिंचने दें और उसे आगे की ओर ताने रखें। इस तनाव में आपके सीधे हाथ में स्प्रिंग की तरह तनाव पैदा हो जाएगा। यह पोजीशन ठीक वैसी ही होती है जैसे गुलेल चलाने में हम गुलेल की रबर को बाएं हाथ से पीछे की ओर खींचते हैं और उसकी दो मुँह की लकड़ी को दाएं हाथ से आगे की ओर ताने रखते हैं। इस तनाव को या खींचतान को हम जितना ज्यादा बढ़ाएंगे, गुलेल का पत्थर उतनी ही तेजी से आगे की ओर फेंक सकेंगे। ठीक वही स्थिति हमारे दाएं और बाएं हाथों की होनी चाहिए। अब जैसे ही हमें विरोधी पर आक्रमण करना हो, हमें एक बार बाएं हाथ को पीछे की ओर ले जाना चाहिए और बाएं हाथ को उसके विपरीत आगे की ओर ले जाकर बाएं हाथ की पकड़ से दाएं हाथ को हथेली झटके से मुक्त कर देनी चाहिए। इस तरह हमारे दाएं हाथ खुली हथेली की सबसे छोटी उंगली के किनारे का वह मजबूत और कठोर हिस्सा, जिसे हमने धारदार बनाया है वह झटके से विरोधी के शरीर के किसी भी नर्म भाग पर तेजी से पड़ता है।

प्र० : कुछ व्यक्ति बातचीत करते समय हकलाते क्यों हैं ?

उ० : हम सब ही ने हकलाते या रुक रुक कर बातचीत करने वाले लोग देखे हैं। ऐसे लोगों का इलाज समझदारी तथा प्रेम से करना चाहिये। परन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा होता नहीं है। यहां तक कि तमाशा इत्यादि दिखाने वाले भी हकलाने को हास्य का विषय ही समझते हैं। बोलने से सम्बन्धित अंगों में एक प्रकार का अतिसंकुचन आ जाने के कारण व्यक्ति हकलाने या बोलने में अटकने लगता है। अतिसंकुचन के कारण बोलते समय शब्द ठीक से उच्चारित नहीं हो पाते और बोलने वाला बोलते-बोलते रुक जाता है। अधिकतर इसके बाद जिस ध्वनि पर संकुचन हुआ था वो ही बार बार निकलती है। हकलाना कई प्रकार का होता है कुछ दशाओं में केवल कोई विशेष शब्द या अक्षर बोलने में ही कठिनाई अनुभव होती है, परन्तु जटिल रोगियों के जीभ, गले, चेहरे और सांस लेने तक के अंगों में अतिसंकुचन हो जाता है।

साधारण बोलना जो हम बिना प्रयास के ही कर लेते है एक पेचीदा प्रक्रम है। बोलने में हलक, गाल, जीभ और होटों के एक बहुत हो अद्भुत समन्वय की आवश्यकता पड़ती है। ये समन्वय बहुत सूक्ष्मता से होना चाहिए, जिसके अभाव से व्यक्ति हकलाने लगता है।

चार पाँच वर्ष की आयु से पहले हकलाने का कम ही पता चलता है। हकलाने का कारण कोई भी शारीरिक कमी या मानसिक परेशानी हो सकती है।

कुछ रोगियों की हकलाने की समस्या का इलाज किया जा सकता है। इसके लिए रोगी को पढ़ने का सही तरीका सिखाया जाता है, साथ-साथ उन्हें बातचीत करते समय सोच समझ कर हर शब्द धीरे-धीरे उच्चारण करने का अभ्यास भी कराया जाता है। हकलाने की प्रवृत्ति उत्पन्न होते ही रोगी को सांस लेने पर नियन्त्रण भी सिखाया जाता है। जिन ध्वनियों तथा ध्वनियों के मिलाव से अधिक परेशानी होती हो, उन्हें धीरे-धीरे समझ कर उनका ठीक से बोलने का अभ्यास करके हकलाने की आदत पर काबू पाया जा सकता है।

परन्तु हकलाने का इलाज इस कार्य के विशेषज्ञों द्वारा ही कराया जाना चाहिए क्योंकि मानसिक कारणों से उत्पन्न रुकावटों को बहुत ध्यान से समझने और सुलझाने की बहुत आवश्यकता होती है।

प्र० : क्या बायें हाथ का प्रयोग करने वालों में कोई शारीरिक कमी होती है और क्या इन्हें दायें हाथ से कार्य करने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए ?

उ० : यदि आप बायें हाथ का प्रयोग करते हैं या किसी बायें हाथ वाले को जानते हैं तो आप स्वयं ही जान जायेंगे कि दायें हाथ प्रयोग करने वालों के संसार में रहने के

लिए इन बायें हाथ को प्रयोग करने वालों को कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ता है, या यूं कहिए कि कुछ समझौते करने पड़ते हैं। संसार के ९६%व्यक्ति दायें हाथ का प्रयोग करते हैं और ये स्वभाविक ही है कि हर वस्तु जैसे दरवाजों पर लगे लट्टू, ताले, पेचकस, मोटर कारें, गाने बजाने के साज, मशीनें और यहां तक की वस्त्रों में लगे बटन तक भी उनके सुभीते को ध्यान में रख कर ही बनाए जाते हैं। फिर भी बायें हाथ का प्रयोग करने वाले भी काफी आराम से जीवन व्यतीत कर लेते हैं। उदाहरण के लिये लियोनारडो-डा-विन्सी तथा मिश्लन्जिलो संसार के दो महान व्यक्ति थे जो बायें हाथ का ही प्रयोग करते थे।

जिन माता-पिता के बच्चे बायें हाथ का प्रयोग करते हैं वो इस विषय में काफी चिन्तित रहते हैं। परन्तु बच्चों को इस फर्क के लिए कुछ कहना बुद्धिमता नहीं है बायें हाथ से कार्य करना किसी भी प्रकार की शारीरिक कमी नहीं है तथा इसके लिए बच्चों को डांटना, फटकारना और सजा देना नितान्त भूल है। इसके अतिरिक्त उनसे बायें के बजाय दायां हाथ प्रयोग करने को बाध्य करना भी बिल्कुल गलत है।

देखना यह है कि अधिकतर व्यक्ति दायें हाथ से काम क्यों करते हैं। लम्बे समय से ये समझा जाता है कि दायें हाथ का प्रयोग करने में सिखाने, पुरानी इस हाथ से कार्य करने की प्रथा तथा सबको दायां हाथ प्रयोग में लाते हुए देखने का महत्वपूर्ण कारण है। इसीलिए बायें हाथ से कार्य करने वाले को देखते ही उसमें कोई कमी महसूस की जाती थी परन्तु इसके विपरीत अधिकतर सब दायां हाथ इसलिए प्रयोग करते हैं क्योंकि उन सबके दिमाग एक विशेष ढंग से काम करते हैं। दिमाग के दो भाग हैं बायां तथा दायां और इनमें एक भाग दूसरे से अधिक प्रभावी है। दिमाग का दायां भाग शरीर के बायें भाग का, बायां भाग शरीर के दायें भाग का संचलन करता है। क्योंकि अधिकतर लोगों में दिमाग का बायां भाग अधिक प्रभावशाली है इसलिए शरीर का दायां भाग अधिक कार्यकुशल है। परन्तु कुछ लोगों में ये सिलसिला उलट हो जाता है और इनके विभाग का दायां भाग अधिक प्रभावी होता है और परिणामस्वरूप उनके शरीर का बायां भाग अधिक कार्यशील हो जाता है। जो कि बिल्कुल हमारे दायें हाथ के समान ही होता है। इसलिए बायें हाथ के प्रयोग में कोई फर्क नहीं है।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

दूर दर्शन पैरोडी

दूरदर्शन पर एक कार्यक्रम होता है पाठकों के पत्रों के उत्तरों का। उसका शीर्षक सांप और बम से मिलता जुलता है । एक साहब और एक साहिबा आकर बैठ जाते हैं । साहिबा के हाथ में आठ दस पत्र होते हैं । वह उन पत्रों को पढ़ती हैं और, साहब अपने अंट-सट उत्तर देते रहते हैं । कई बार जवाब सुन कर ऐसा लगता है जैसे उनको पत्र समझ ही न आया हो और कई बार जवाब में अपनी ही ऐसी हांके जायेंगे कि मर्यादा पुरुषोतम राम भी शरमा जायें । इनके उत्तर कितने दुराग्रह पूर्ण, बेतुके और अंट-शंट होते हैं उसी का इस पैरोडी में चित्रण देखेंगे आप और हम ।

देखिये कोई भी बुद्धिमान और शरीफ आदमी शराब की तारीफ नहीं कर सकता । शराब एक बहुत गिरी हुई और बुरी चीज है । यह बहुत ही नुकसान देह है । आपके पति ऐसा करते हैं तो लगता है शराब पीते-पीते उनको इतना व्यसन हो गया है कि उनका मानसिक संतुलन ठीक नहीं है । आप उनका किसी मानसिक रोग के चिकित्सक से इलाज करवाइये । हम तो किसी को अच्छा लगे या बुरा ऐसे कार्यक्रम अपने आका को खुश करने के लिये देते ही रहेंगे । कोई बुद्धिमान और शरीफ आदमी शराब को हाथ नहीं लगा सकता ।

पोपट लाल दीवाना टी. वी. आलोचक
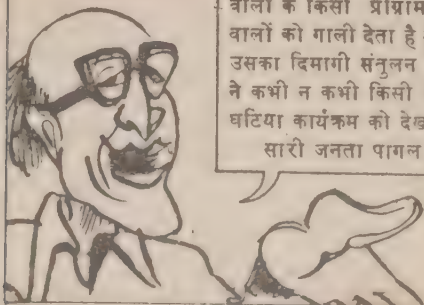
देख लो टी. वी. । दर्शकों कोई आदमी टी. वी. वालों के किसी प्रोग्राम से चिढ़ कर दूर दर्शन वालों को गाली देता है तो वह बेवकूफ पागल है उसका दिमागी संतुलन ठीक नहीं है। सभी दर्शकों ने कभी न कभी किसी न किसी दूर दर्शन के घटिया कार्यक्रम को देख गाली दी होगी इसलिये सारी जनता पागल और बदतमीज है ।

उस भाई ने अपने घर में व्यक्तिगत रूप से टी. वी. वालों को गाली दी । लेकिन यह भाई कबाड़ दत्त लाखों दर्शकों के सामने प्रस्तुत किये जाने वाले प्रोग्राम में मुखातिब होने पर भी अपना दिमागी संतुलन खो बैठा और एक व्यक्ति को दूसरे शब्दों में मूर्ख, बदमाश और पागल की गाली देने लगा अब आप ही बताइये इलाज की ज़्यादा जरूरत उस आदमी को है या इसको ?
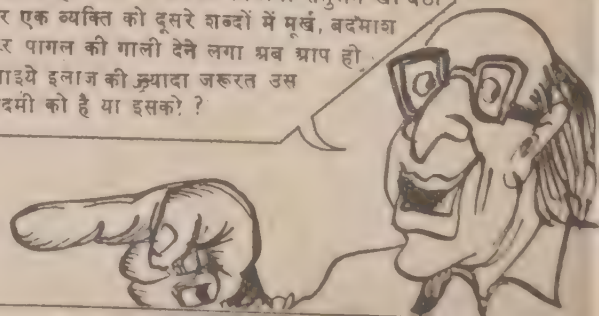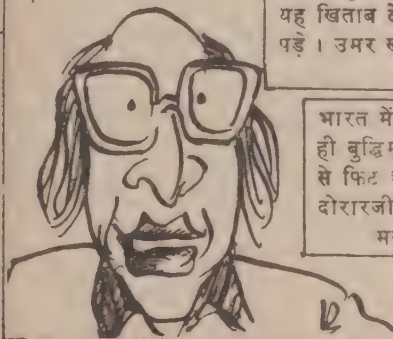
यह सभी मानते हैं कि शराब एक बुरा व्यसन है परन्तु सारे दूसरे काम भूल शराब के पीछे डंडा लेकर पड़ना और इससे पागलपन की हद तक नफरत करना भी स्वयं में बुराई है। शराब के जहर से नफरत का जहर ज्यादा विषैला होता है जो आदमी का दिमाग भी ज्यादा असंतुलित कर देता है। स्वास्थ्य के लिये तो बुरी चीजें बहुत सी हैं। चाट-पकौड़ी, गोलगप्पे, आइसक्रीम, होटल का खाना, पान और मिठाई आदि। तो क्या देश के सारे होटल, पान की दुकानें, हलवाइयों की दुकानें और चाट-पकौड़ी की रेहड़ियां बन्द कर दी जायें? शराब पीने वाली जातियां चाँद पर उतर चुकी हैं और दूसरी ओर नशे के विरोधियों का क्या हाल है, आपस में कुत्तों की तरह लड़ रहे हैं। देश को बरबादी और विघटन की तरफ घसीट कर ले जा रहे हैं। भ्रष्टाचार बेईमानी और महंगाई का तांडव नृत्य हो रहा है जनता पिस रही है लेकिन ये नशाबन्दी के पट्टे लगा कर घूमने के सिवा क्या कर रहे हैं?
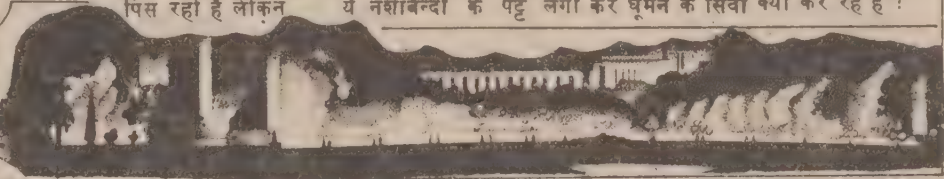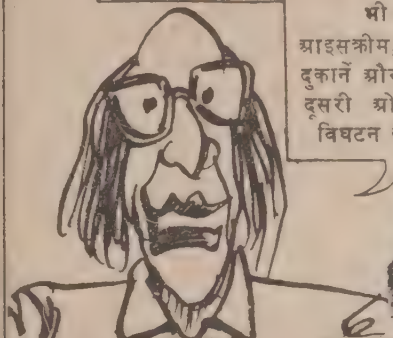
जरा शराब के विरोधियों का मानसिक संतुलन देखिये। युगांडा के दादा अमीन ने तीन लाख लोग मार दिये। वह मुर्दों के गुर्दे निकाल कच्चा खा जाया करता था। पड़ौस के नशाबन्दी कराने वाले जनरल जिया का हाल देखिये। एक झूठा मुकदमा चला कर एक अत्यन्त लोकप्रिय नेता को फांसी पर लटका दिया। उससे आगे ईरान के खुमैनी का हाल देखिये रोज दस बारह आदमियों को गोली से मरवा देता है। अपने ही देश में अखबारों में रोज राजनारायण के वक्तव्य पढ़िये···आपको पता लग जायेगा।

इतिहास के पन्ने मोड़िये! हिटलर शाकाहारी तथा शराब विरोधी था। उसने दुनिया में क्या तबाही मचाई लाखों बच्चों को भून दिया। अपने ही भारत के एक मुगल बादशाह शराब विरोधी औरंगजेब ने क्या किया? भाई की आँखें निकलवा लीं

हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया। बाप को कैद में डाल तड़फा-तड़फा कर मार डाला, अपनी बहन का भी यही हाल कर डाला– अपने मानसिक संतुलन का कबाड़ दत्त जैसा ही उदाहरण दे डाला।
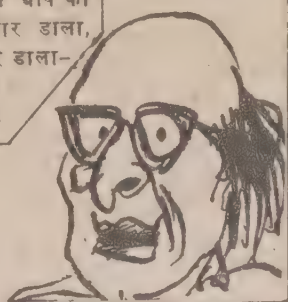
यह देश दो हजार वर्षों तक शराब पीने वाली जातियों का गुलाम रहा है। अब शायद शराब विरोधियों की मेहरबानी से एक बार और देश गुलाम हो जायेगा। सेना के जवान जो शून्य से भी नीचे तापमान पर हिमालय की रक्षा कर रहे हैं वह नशाबन्दी के बाद किस प्रकार लड़ पायेंगे? चीन फौजें इकट्ठी कर रहा है और हमारी शेख चिल्ली सरकार नशाबन्दी के लफड़े में पड़ी है।
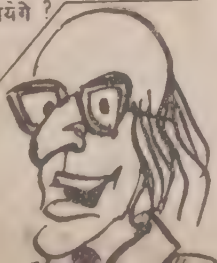
मटका बहन, आप अगले प्रोग्राम में अपने कबाड़ दत्त से पूछिये कि उसे मानसिक संतुलन का अर्थ भी आता है? न भी आता हो तो कोई बात नहीं अगले चुनावों में जब शेख चिल्लियों की सरकार टूट जायेगी तो अपने आप पता लग जायेगा।
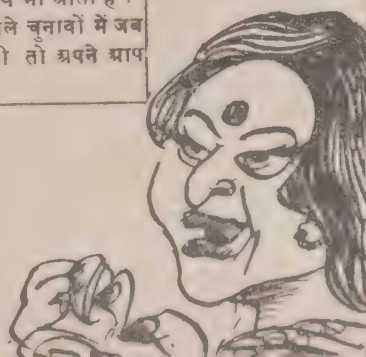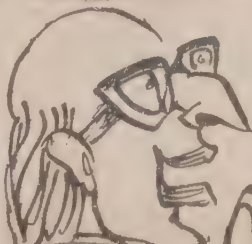
पृष्ठ 13 से आगे-

अजगर की फुंकार से वह वृक्ष चोटी तक कांप गया···वृक्ष के तने पर लिखा हुआ था 'भविष्य' और अजगर की शक्ल लाला से मिलती हुई थी···लेकिन वह इससे आगे नहीं देख सका कि अजगर ने उस वृक्ष को निगल लिया या कि वृक्ष का तना वहीं अटल डटा रहा··· ।

और डर से उसकी आंख खुल गयीं... पसीने में डूबा हुआ फिर रातभर वह सो नहीं सका···तीसरे-चौथे दिन बुआ और मासी अपने घर चली गईं···बुआ मां से कह गई थीं कि फूलवती की शादी जल्दी कर देना क्योंकि बीस वर्ष की तो हो चुकी है—और मां ने लड़का जल्दी ढूंढ़ने की हामी भर ली थी···।

बिनोद की परीक्षा समीप आ रही थी ···दसवीं की परीक्षा थी और अधिक पढ़ाई की आवश्यकता थी···सरिता ने पढ़ने आना बन्द कर दिया था ताकि विनोद की पढ़ाई में बाधा न पड़े···वह छोटी कक्षा में थी इस लिए अधिक परिश्रम की जरूरत नहीं थी, वैसे भी बिनोद का विचार था कि सरिता तीव्र बुद्धि की लड़की है और अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण होगी—।'

इन्हीं दिनों एक अजीब घटना घटी जिसके कारण विनोद को एक तीव्र मानसिक झटका लगा···एक रात स्टडी के बाद वह सोने के लिए लेटा···शायद तीन बज रहे थे ···पढ़ते-पढ़ते उसका सिर दुखने लगा था··· थकान भी अधिक थी···फिर भी उसे नींद न आई···वह बड़ी देर तक जागता रहा···फिर किसी जरूरत से बिस्तर से उठा···।

हल्की गर्मियां आरम्भ हो गई थीं, कुछ लोग आंगन में सोने लगे थे उनमें बुआ फूफाजी, दादीजी और रघु शामिल थे···मामा-मामी छत पर सोते थे, राधा दालान में सो रही थी···मां और पिताजी बड़े कमरे में सो रहे थे···गैलरी की खिड़कियों से अच्छी हवा आती थी···विनोद अपने कमरे में ही सोता था···उसका कमरा काफी हवादार था···वह बिस्तर से उठा और चप्पल पहनकर बाहर निकल आया···ज्यों ही वह आंगन में आया उसे कहीं चूड़ियों की खन-खनाहट सुनाई दी जैसे किसी लड़की के दोनों हाथ एकसाथ उठे हों···विनोद चौंक पड़ा···उसने राधा के पलंग की ओर देखा जो चादर ओढ़कर सोया करती थी···उसकी सफेद चादर विनोद को अन्धेरे में भी साफ दिखाई दे रही थी लेकिन वह अचम्भे में था कि राधा इतनी लम्बी-चौड़ी कैसे हो गई···वह वास्तविक बात समझ तो न सका लेकिन उसे कुछ खटक-सा गया···बाथ-रूम की ओर गया तो उसने पलंग की चिर-मराहट सुनी जैसे कोई पलंग से उठा हो। विनोद जल्दी से बाहर आया···रघु राधा के पलंग से उठकर अपने पलंग की ओर जा रहा था···जब विनोद अपने कमरे की ओर बढा तो रघु अपने पलंग पर लेट चुका था —उसे राधा पर बहुत गुस्सा आ रहा था, दिल चाह रहा था कि राधा का गला दबा दे, वैसे इस लड़की के तेवर पहले ही खराब थे जो रघु के चौड़े सीने और उसकी भरी हुई शक्तिशाली भुजाओं पर मरती थी··· विनोद ने उसकी आंखों में रघु के लिए एक कामना-सी देखी थी···लेकिन उसने यह नहीं सोचा था कि वह सचमुच इतना गिर जाएगी उसे सरिता की चेतावनी याद आगई जो उसने रघु और राधा के बारे में दी थी···सरिता ने कहा था कि रघु अच्छा आदमी नहीं था ···और राधा सहज ही भटक सकती है— उफ···सरिता इतनी साधारण लड़की और उसकी दृष्टि इतनी पैनी···इतनी अनुभव-भरी···और उसी सरिता को बुआ आवारा कहती है···उस पर आरोप लगाती है कि वह सड़कों पर घूमती है, लड़कों से पढ़ती है —और यह राधा तो घर ही में रहती है जहां सभी उसके रिश्तेदार हैं···कितना बड़ा अन्तर है दोनों के चरित्र में—राधा चरित्र-हीन होते हुए भी चरित्रवान समझी जाती है और सरिता चरित्रवान होते हुए भी चरित्रहीन मानी जाती है···विनोद राधा और रघु के सम्बन्ध के बारे में सोचने लगा···अगर राधा भटकती हुई दूर निकल गई तो कितनी बदनामी होगी और जो जहर रघु और राधा इस घर में फैलाएंगे उसका कुप्रभाव क्या दो छोटी बहनों सावित्री और रजनी पर नहीं पड़ेगा ?···अभी वह यह सोच रहा था कि एक छाया-सी उसके कमरे में प्रविष्ट हुई···वह राधा थी जो विनोद के पलंग के पास आकर खड़ी हो गई और धीरे-से बोली—

'विनोद भैया···!

विनोद एकाएक उठ गया···क्रोध से उसकी सांस फूल गई थी···।

'विनोद भैया···आप किसी से कहिएगा

● एक व्यक्ति मर कर स्वर्ग जा रहा था। स्वर्ग के लिए नर्क की कालोनी के पास से रास्ता जाता था। उस व्यक्ति ने पास के मकान पर नजर डाली तो खिड़की में अंदर का दृश्य नजर आया। एक व्यक्ति आराम से गद्दों पर लेटा था एक हसीना उसे जाम पिला रही थी और दूसरी हसीना बगल में सितार पेर मधुर धुन बजा रही थी।

उस व्यक्ति ने सोचा कि नर्क में एश्वर्य का यह हाल है तो स्वर्ग में क्या होगा ? परन्तु स्वर्ग पहुंचकर उसे निराशा हुई। वहां उसे अच्छा मकान मिला, समय पर आकर देवदूत स्वादिष्ट खाना दिया करता था इसके अलावा मनोरंजन का कोई सामान नहीं था। एक दो बार उसने देव-दूत से पूछा कि यहां नाच गाना वगैरह नहीं होता ? देवदूत ने उत्तर दिया, 'यहां तो साहब बस यही है जो आपको मिल रहा है और शांति है।'

काफी दिन बोर होने के बाद उस व्यक्ति ने धर्मराज को प्रार्थना पत्र दिया कि उसे नर्क भेज दिया जाये। उसका जी स्वर्ग में नहीं लगता। धर्मराज ने उत्तर दिया कि बगैर कोई पाप किये उसे नर्क नहीं भेजा जा सकता। खिन्न होकर उस व्यक्ति ने दूसरे दिन जब देवदूत खाना लेकर आया तो उस का खून कर दिया।

उस व्यक्ति ने पास खड़े यमदूत से दरयाफ्त किया कि यह क्या नजारा है ? यमदूत ने कहा कि यहां तो यही कुछ होना है बस ?

फलस्वरूप उसे नर्क भेजा गया। वहां उसे भयानक नजारा नजर आया। तेल की खौलती कढ़ाइयां, जलती आग, उफनता खून और नर्क में यातना भोगते लोगों की चीखें। उस आदमी ने यमदूत से उस दृश्य का जिक्र किया जो उसने स्वर्ग जाते समय रास्ते से देखा था तो यमदूत अट्ठाहास लगा कर बोला, 'बेवकूफ वह हमारा प्रचार विभाग था।'

● सर्कस मैनेजर के पास एक बहुत मोटी महिला पहुंची और काम मांगा। मैनेजर ने पूछा, 'आप क्या करतब दिखा सकती हैं ?'

महिला ने उत्तर दिया, 'दो आदमियों की मदद मिले तो मैं बैठ सकती हूं।'

परोपकारी

बात-बे-बात-की
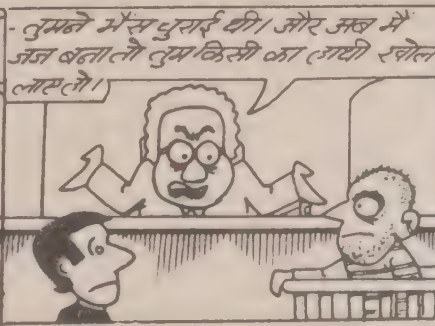
समाजवाद

—महेन्द्र रिमझिम

शहर के
चौराहे पर
एक भिखारी ने
नेता को पकड़ लिया,
कस कर जकड़ लिया।
और पूछा !
तूने पिछली बार
मुझ से
समाजवाद के नाम पर वोट लिया
पर
समाज वाद लाकर मेरे लिए क्या किया
नेता बोला,
बेवकूफ,
मैंने न जाने कितने खाते पीते घरों को
तेरी कैटेगिरी में लाकर
खड़ा कर दिया
फिर भी पूछता है
मैंने समाज वाद लाकर क्या किया ?

पृष्ठ २४ से आगे—

नहीं।' राधा ने धीमे से कहा, 'मैंने मना किया था लेकिन रघु जबरदस्ती मेरे पास आ गया।'

विनोद ने गुस्से से राधा को जोर से धक्का दिया और राधा चुपचाप उठकर कपड़े झाड़ती हुई बाहर चली गई···विनोद गुस्से में झटके से लेट गया···सुबह उसका पहला पर्चा था।

परीक्षा कुशलता से बीत गई···उसके सभी पर्चे अच्छे हुए थे···आखिरी पर्चा देने के बाद विनोद बारह बजे दोपहर से शाम पाँच बजे तक पड़कर सोया...कई रातों की नींद थी...पांच बजे उठने पर भी आँखें लाल अंगारा हो रही थीं—नहा-धोकर कपड़े पहनकर बाहर जाने की तैयारी कर रहा था कि छोटे भाई कमल ने आकर कहा कि पिताजी बुला रहे हैं···विनोद बड़े कमरे में आ गया···पिताजी और माँ दोनों बैठे थे ···पिताजी उसे देखकर मुस्कराए और स्नेह से बोले—

'क्यों बेटा···परीक्षा समाप्त हो गई ?'

'जी हां···आज आखिरी पर्चा था।' विनोद ने नजरें झुकाए हुए उत्तर दिया।

'पर्चे कैसे हुए?'

'भगवान की कृपा से सब अच्छे हुए हैं।'

'अब आगे क्या सोचा है ?'

'जो आप उचित समझें···।

'जैसे तुम कहो···चाहो तो अपनी ही कम्पनी में डेढ़ सौ रुपये महीना की नौकरी दिलवा दूं या फिर आगे पढ़ने के लिए कालिज में दाखिला ले लो।'

विनोद के दिल को धक्का-सा लगा··· उसे आशा थी पिताजी पूछेंगे कि आगे यूनिवर्सिटी में कौन-सी लाइन में उसकी रुचि है ···लेकिन यहाँ तो मामला ही अलग था··· अगर पिताजी का स्वयं ही आगे पढ़ाने का विचार होता तो ऐसी बात नहीं कहते··· लेकिन यहाँ माँ ने उसका साथ दिया···वह बोलीं—

'हां···अभी से नौकर करा दीजिए··· अभी बेचारे की आयु ही क्या है 'अभी तो खेलने खाने के दिन हैं—मेरी कब से कामना थी कि मेरा बेटा बड़ा होकर कालिज में पढ़ ···बी० ए० एम० ए० पास करे···।'

'मैं तो इसलिये कह रहा था कि डेढ़ सौ रुपये महीना मिलेंगे···ढाई सौ मुझे मिलते हैं ···घर का थोड़ा भार ही हल्का हो जाएगा ···अगर तुम नहीं चाहतीं तो ठीक है फिर कालेज में दाखिला करा दिया जाएगा।' पिताजी का स्वर कुछ चिन्ता में डूबा हुआ था।

'मैं आपकी चिंताओं को अनुभव करता हूं पिताजी। विनोद ने धीरे से कहा, 'शिक्षा तो परिस्थितियाँ सुधरने पर भी चालू की जा सकती है···अब मुझे नौकर ही करा दें···।

'यह कभी नहीं होने दूंगी···'माँ कुछ गरम होकर बोली, 'जहां इतने वर्ष तंगी में गुजरे हैं वहाँ चार वर्ष और सही···कौन्-सा बी० ए० करने में दस वर्ष लगते हैं···।'

'अच्छा भाई अच्छा···'पिताजी हंसकर बोले, 'विनोद अब बी० ए० ही करेगा।'

विनोद चुपचाप सिर झुकाए बैठा रहा ···कुछ क्षण बाद पिताजी ने कहा—

'फूलवती के लिए वर मिल गया है।'

'अच्छा···।'

'एक डाक्टर है···छोटी-मोटी डिस्पेंसरी है···घर बार का अकेला है···आमदनी भी खासी है।'

'ठीक है—।'

'जाड़ों के आरम्भ में शादी कर देंगे।'

विनोद बिना कुछ कहे उठ गया··· कमरे में आकर पर्स टटोला···उसमें छः-सात रुपये पड़े थे···पर्स को जेब में ठूसकर निकलने ही वाला था कि सरिता आ गई···

'आओ···।' विनोद मुस्कराकर बोला, 'बड़े दिनों बाद आईं।'

'तुम्हारी परीक्षा हो रही थी···स्टडी डिस्टर्ब होती···इसीलिए नहीं आई।'

'और तुम्हारी परीक्षा का क्या हुआ ?' विनोद ने पूछा।

'परिणाम भी आ गया···पहली डिवीजन और दूसरी पोजीशन···!

बहुत सुन्दर···' विनोद बड़े हर्ष से बोला, 'तब तो हमारा मिठाई का अधिकार है।

'मां ने शाम के खाने का प्रबन्ध किया है···तुम्हारे लिए।'

'नहीं भई···यह ठीक नहीं···मैं तो मजाक कर रहा था···मुझे यह 'तकल्लुफ' पसन्द नहीं।'

'पसन्द तो मुझे भी नहीं' 'सद्भावना केवल भोजन खिलाकर ही व्यक्त नहीं की जाती···लेकिन क्या करूं मांजी आग्रह कर रहीं हैं कि तुम्हें रात के लिए अवश्य लेकर आऊं···मैंने बहुत मना किया किन्तु वह मानी ही नहीं।'

'मेरा मन आज फिल्म देखने का था।'

'फिल्म कल भी चलेगी···लेकिन माँ ने जिस खाने का प्रबन्ध किया है वह शायद कल न कर सकें।'

'चलो···।' विनोद बोला।

फिर वह सरिता के साथ उसके घर चला गया···साधारण से फर्नीचर के साथ एक छोटा-सा किंतु साफ-सुथरा घर था··· हर चीज सलीके की थी···विनोद ने आज पहली बार सरिता की माँ को देखा था और मां ने पहली बार विनोद को देखा था···वह बड़ी खुश दिखाई दे रही थीं···खाने से उन्होंने क्या-क्या कुछ पका डाला था···दम आलू, भरे हुए नर्म टिंडे, मटर, पनीर और परांठे···साथ में सिवैया भी थीं।

'इतना कष्ट क्यों किया आपने—?' विनोद खाने के लिए बैठता हुआ बोला, 'जो हर रोज बनता है वही खा लेता।'

क्रमशः

बन्द करो बकवास

दुःखी मन मेरे सुन मेरा कहना जहां नही चैंना वहां नहीं रहना।
बन्द करो बकवास, तुम्हारा यही गाना सुन-सुन के मेरे तीन नौकर जा चुके हैं।
जिन्दगी प्यार की दो चार घड़ी होती है !
बन्द करो बकवास, दो-चार घड़ी नहीं तुम लोग एक कप काफी लेकर ढाई घंटे से बैठे हो।
ओ रोक जा, रुक जा रुक जा—लौट कर आना होगा।
बन्द करो बकवास चलो तुम्हें भी पिक्चर ले चलता हूं. अब निकालो मेरा पर्स।

पृष्ठ ८ की शेष भाग -

के कुछ ही दिनों बाद मिटा दिया। विवाह के अवसर पर पहनाया गया चूड़ा तोड़ दिया गया और लीना पत्नी का सुख भोगने से पहले ही विधवा हो गई।

अब सवाल यह उठता है कि लीना चन्दावरकर और किशोर कुमार का यह टांका जुड़ा कैसे? वह कौन से हालात थे जो इन दोनों को एक-दूसरे के करीब लाए? यह सब कुछ जानने के लिए किशोर के रोमांटिक जीवन पर एक नजर डालनी होगी।

किशोर कुमार की पहली पत्नी थी रोमा देवी। रोमा से किशोर ने तब विवाह किया था जब इसे प्रसिद्धि हासिल भी नहीं हुई थी और यह काम की तलाश में भटकता फिरता था। लेकिन किशोर का स्वभाव तब भी कुछ-कुछ ऐसा ही था जैसा अब है। अजीबो गरीब हरकतें करना, चिड़ियों, कव्वों व तोतों की आवाजों में शोर मचाना इसकी आदत में शामिल था। रोमादेवी के सहयोग से किशोर को एक पुत्र रत्न की भी प्राप्ति हुई जिसका नाम है अमित कुमार जो आज भी अपने डैडी के साथ रहता है। रोमा ने किशोर से तंग आकर इसे तलाक दे दिया। किशोर अकेला रह गया।

उन्हीं दिनों मधुबाला ने फिल्मों में प्रवेश किया था। किशोर के दिल में मधुबाला बस गई। अपने सपनों में मधुबाला को संजोने के बाद किशोर यह चाहने लगा कि मधुबाला उसके जीवन में पत्नी बन कर आ जाये। उन दिनों किशोर कुमार के पास एक छकड़ा कार थी जिसका हौरन के सिवाय सब कुछ बजता था। इसी गाड़ी के नाम पर किशोर कुमार ने अपनी फिल्म 'चलती का नाम गाड़ी' बनाने की घोषणा कर दी। इस फिल्म में मधुबाला को बतौर हीरोइन लिया गया ताकि किशोर ज्यादा से ज्यादा समय मधुबाला के करीब रह कर काट सके। किशोर के भाई अशोक कुमार और अनूप कुमार भी इस फिल्म में शामिल थे। फिल्म के बनते-बनते किशोर कुमार और मधुबाला एक-दूसरे के करीब आ गये और फिर एक दिन किशोर ने अपनी पूर्व नियोजित स्कीम के अनुसार मधुबाला के आगे विवाह का प्रस्ताव रख दिया। प्रस्ताव स्वीकार हो गया। और दोनों विवाह बन्धन में बंध गये। यह दोनों प्रेमी विवाह के बाद भी एक-दूसरे को प्यार करते रहे और दोनों का वैवाहिक जीवन सुखमय रहने लगा। लेकिन विधाता को कुछ और ही मंजूर था। मधुबाला को दिल का कैंसर हो गया और एक दिन मधुबाला इस संसार से सदा-सदा के लिए कूच कर गई। मधुबाला की मौत पर किशोर कुमार बेहद रोया और इस पर पागलपन के दौरे पड़ने लगे। निर्माता, निर्देशकों, सहायक कलाकारों के साथ किशोर का व्यवहार कटु हो गया। धीरे-धीरे सब लोग किशोर से दूर होते चले गये और किशोर अकेला रह गया। धन्धा पानी ठप हो गया। लेकिन देवानन्द ने किशोर का साथ नहीं छोड़ा वह किशोर से अपने गीत गवाता रहा, इसका अनुचित व्यवहार भी वह सहन करता रहा शायद यही कारण है कि किशोर आज भी देवानन्द की इज्जत करता है।

समय बीतता गया और फिल्मी पर्दे पर राजेश खन्ना नाम का नया सितारा उभरने लगा। किशोर की आवाज राजेश खन्ना पर फिट हो गई और फिर देखते ही देखते राजेश खन्ना के साथ-साथ किशोर कुमार का सितारा भी चमक उठा। लोग इसके नखरे उसी तरह बर्दाश्त करने लगे जैसे राजेश खन्ना के करते थे।

अब किशोर ने मधुबाला से विवाह करने वाली तरकीब दोबारा आजमाई। इस बार इसकी निगाह योगिता बाली पर थी। किशोर ने फिल्म 'शाबाश डैडी' की घोषणा की और नायिका चुना योगिता को। अपनी फिल्म की नायिका बनाने के साथ वह इसे अपने दिल की नायिका भी बनाना चाहता था। और फिर एक दिन योगिता के आगे भी विवाह का प्रस्ताव रख दिया। दोनों विवाह को तैयार हो गये और चोरी छिपे यह विवाह भी हो गया। बाद में विधिवत विवाह की घोषणा हुई।

योगिता से तलाक की खबरों के बाद यह अफवाहें काफी दिनों तक गर्म रही कि किशोर कुमार एक दक्षिण भारतीय अभिनेत्री से रोमांस लड़ा रहा है। बंगलौर में इसने बंगला भी बनवा लिया है। लीना चन्दावरकर इसकी चौथी पत्नी है? यह विवाह भी किशोर ने पुराने हथकण्डों के बल पर ही किया है। लीना को पहले तो किशोर ने बतौर नायिका अपनी फिल्म 'प्यार अजनबी है' के लिये साइन किया और फिल्म की आफर के साथ ही साथ विवाह की भी आफर रख दी, जो स्वीकार कर ली गई, लीना भी शीघ्र विवाह पक्ष में थी दोनों ने यह गुपचुप सात फेरे फेर लिये।

हनीमून मनाने के लिये किशोर ने अपनी फिल्म 'प्यार अजनबी है' की आउटडोर शूटिंग का ड्रामा किया और यह जोड़ी यूनिट सहित बंगलौर चली गई। यूनिट के कुछ प्रमुख सदस्यों का कहना है कि बंगलौर में किशोर ने शूटिंग कम की हनीमून ज्यादा मनाया। विवाह की यह खबर सुनकर लीना के परिवार वाले बंगलौर की तरफ दौड़े, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी, हनीमून मन चुका था। फोन करके जब इस विवाह की पुष्टि किशोर कुमार से की गई तो फोन पर किशोर ने कुछ भी जवाब देने के बजाय यह गीत गुनगुनाना शुरू कर दिया,

"जिन्दगी इक सफर है सुहाना
यहां कल क्या हो किसने जाना?"

और फिर लाइन काट दी गई। लीना के परिवार वालों से इस सम्बन्ध में पुष्टि चाही तो वह भी बात गोल कर गये। लेकिन अब यह वास्तविकता बम्बई में चारों तरफ फैलती जा रही है। यह दोनों इस विवाह को कब तक छिपायेंगे, बस यही देखना अब बाकी रह गया है।

परमानेन्ट श्रोता

प्रथम रात्रि को
दुल्हन का घूंघट उठाते हुए
यूं बोले कवि जी
प्रिये,
आज, मानो मेरा हृदय कमल सम खिल गया है!
क्योंकि मुझे,
एक श्रोता परमानेन्ट मिल गया है।

बजट

यही है
अपने घर का बजट
पहली को पत्नी का प्यार
पन्द्रह से खटपट,
तीस को चौपट।

[illegible]

नेश कुमार जैन द्वारा कपूर टर स्टोर, बून्दी (राज-स्थान), २० वर्ष, पत्र-मित्रता, हनवानी करना, दीवाना ढ़ना।

जगदीश लाल गुलाटी, टी० २८, सुदर्शन पार्क, (मोती नगर) नई दिल्ली, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, जासूसी उप-न्यास पढ़ना।

पुष्प कुमार पुरोहित, मोधी निवास, ३/ए सरदार पुरा, जोधपुर, २५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता, लिखना, तेज चलना।

हरचन सिंह सिद्दू, पुराना बारा दुवारी, साबारी जमशेदपुर, (टाटा), १७ वर्ष, फिल्मी एक्टिंग करना, पढ़ने में रुचि रखना।

रमेश कुमार वाधवाणी, ब्लाक-सी०, ८६५/१७२१ नेताजी, कुर्ला रोड, बम्बई, २५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, अधिक बातें करना, दीवाना पढ़ना।

प्रताप मेघानी, गोपाल दास मेघानी, बैरन बाजार रायपुर (म० प्र०), २२ वर्ष, फिल्म देखना, पत्र-मित्रता, देश-विदेश की यात्रा करना।

भरपूर सिंह 'मान' मकान न० ६/१४३, वार्ड न० ३, गिदड़बाहा (पंजाब), २४ वर्ष, पत्र मित्र बनाना, टिकट संग्रह करना।

व्य बहादुर कार्की, दि० पाल मोज, काठमान्डो, २६ र्ष, मौज मस्ती से रहना, ढ़ना, खेलना व पत्र-मित्र नाना।

नरायण गुप्ता, प्रो० श्री नरायण गुप्ता महोली (सीता-पुर), यू० पी०, १६ वर्ष, स्कूटर रेस करना और जासूसी उपन्यास पढ़ना।

मनोज कुमार, न० १/२६१ बी०, मॉडल रोड, दिल्ली, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, डाक भेजना, संगीत सुनना, नावल पढ़ना, पत्र मित्रता करना।

राजेश प्रसाद, नया टोला कोठी, मजारो रोड, पटना, १८ वर्ष, पत्रिका पढ़ना, मित्रता करना, कार लेकर घूमना।

राकेश कुमार तनेजा, ३१ जी०/१२६, फरीदाबाद, एन. आई. टी., १८ वर्ष, राम करना, भिन्न-भिन्न लोगों से मिलना।

सत्य नारायण मिश्र, द्वारा श्री जनार्दन मिश्र, डिहरी ग्रॉन सोन सदर चौक, रोह-तास, (बिहार), १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना।

अरुण सुनील, मकान न० ३७१/१२, नई रलवे रोड, (गुड़गांवा), १८ वर्ष, कहानी सुनना और सुनाना अच्छी-अच्छी।

शिर वर्मन, १४-किशन ल वर्मन रोड, मलकिया, वडा, १५ वर्ष, कैरम बोर्ड, ोस्ती करना, लड़कों के साथ फ़िल्म देखना।

नरेश कुमार पाहवा, मकान न० १००२, वार्ड न० ७, तोता बिल्डिंग, महरौली, नई-दिल्ली, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, तार करना।

भीवरदास नागवानी, १० वी (स), शा० ह० उ० मा० शाला, नयापारा, (राजिम), १७ वर्ष, गाना सुनना, दोस्ती करना।

इन्द्र जीत सिंह, २७० भई परमानन्द नगर, दिल्ली, १८ वर्ष, नए-नए शहर घूमना रेल की यात्रा करना, दूसरा की सहायता करना।

अनिल कुमार कटारा, इल्यु० जैड० १५७२ नागलराया नई-दिल्ली, १८ वर्ष, पढ़ना और क्रिकेट खेलना, बैडमिन्टन खेलना।

सुरेश कुमार जैन, मेन रोड, पी० ग्रो० विलासी पाड़ा (असम), १६ वर्ष, फिल्म देखना, दीवाना पढ़ना, रेडियो सुनना फरमाईश भेजना।

तेज प्रसाद ४२११ सेवा नगर ब्लाक, नई दिल्ली, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना और पहली बॉल में आउट हो जाना यह मेरा शौक है।

रुण पेरीवाल, पो० फारबिस ज, (बिहार), १७ वर्ष, रमाईश भेजना, पत्र मित्रता, वाना पढ़ना, लड़कों से दोस्ती रना।

ज्ञानचन्द वर्मा, गुजरात हा० बो० सोसायटी, मकान न० ६८, सेक्टर न० ५, गाँधी-धाम, (कच्छ), १४ वर्ष, फिल्मी बनने के सपने देखना।

कृष्ण प्रसाद श्रेष्ठ, जुद्धोदय, मा० स्कूल काठमाडो, नेपाल, क्षेत्रपाटी, १६ वर्ष, सबसे दोस्ती करना, फिल्म देखना, पत्र मित्रता करना।

राजेन्द्र प्रसाद यादव, सिविल लाइन, मकान न० ६, फैजा-बाद (म० प्र०), १८ वर्ष, डाक टिकट संग्रह करना, तेज चलना।

रुपचन्द बनवानी, मकान न० ६० कृष्णा कालोनी आगरा, १७ वर्ष, हाकी देखना, नुमाईश देखना, माता-पिता का आदर करना।

अभिमन्यु मिश्रा, मिश्रा पान शाप ग्रामन, शाक बुलावा, १७ वर्ष बड़ों की इज्जत करना, प्रम से बोलना और खुशी से रहना।

सत्यपाल वधावन 'कुकु' द्वारा श्री सुरेश वधावन, पो० कतरासगढ़, मो० रानी बाजार, जि० धनबाद (बिहार), १६ वर्ष, फिल्म देखना।

रत्नदहर्लन प्रसारी, 'अ सारी मार्केट' गोदबेज स्टैंड बहेड़ी (बरेली), १ वर्ष, रेडियो सुनना, दीवना पढ़ना, बड़ों की सेवा करना।

विनोद कुमार, जी-१५, ईस्ट ग्राफ कैलाश, नई दिल्ली-1, १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता, फिल्म देखना, सैर बड़ों का आदर करना।

सुहेल अहमद, 'रिजावन मंजिल' चौक रोशान, महारन-पुर, १२ वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना, फोटोग्राफी करना, सैर करना।

संजय सिंह, बी २५/७ ए, भेलपुरा वाराणसी, (उ० प्र०) १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दोस्ती करना, किताब पढ़ना, सिनेमा देखना।

संजय विज, म० न० एल-आई-ई, रेलवे रेस्ट हाउस के पास रेलवे, कालोनी, गाजियाबाद, (यू० पी०) १५ वर्ष, डाक टिकट इकट्ठे करना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर कौशिश के। कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज, साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा।
पुरा नीचे लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-बी बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।
नाम
पता
आयु
शौक

प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

अनमोल लतीफे

● एक वकील—'अगर लोग थोड़ी सी समझ से काम लें तो तलाक बहुत कम होंगे।'

दूसरा—'अगर लोग समझ से काम लेने लगे तो शादियां ही बहुत कम होंगी।

● एक प्रोफेसर लड़कियों के नमस्ते का जवाब नहीं देते थे। एक बार एक लड़की ने साहस कर कारण पूछ लिया तो वह बोले, 'दस वर्ष पहले एक को नमस्ते का जवाब दिया था उसकी सजा अब तक भुगत रहा हूं! दस बच्चे हैं, सास है और वह है। सब की सुबह उठकर नमस्कार करना पड़ता है।'

●. एक महिला की प्रथम अंगुली एक्सीडेंट में कट गयी। उसने बीस हजार रुपये हर्जाने का दावा किया। जज ने पूछा, 'एक अंगुली के लिये बीस हजार बहुत नहीं है?'

महिला बोली, 'जज साहब यही तो अंगुली थी जिस पर मैं अपने पति को नचाया करती थी।'

● इन्कम टैक्स विभाग को गुमनाम पत्र मिला, 'महोदय, मैं कई वर्षों से इन्कम टैक्स भरता रहा हूं। अब मेरी आत्मा मुझे धिक्कारने लगी है और मुझे रातों को इसी प्रायश्चित के मारे नींद नहीं आती! मैं आपको इस पत्र के साथ सौ रुपये के पोस्टल आर्डर भेज रहा हू। अगर फिर भी मुझे नींद नहीं आयी तो बाकी भी भेज दूंगा।'

● एक मित्र, 'अच्छा तो तुम अब अखाड़े में कुश्तियां लड़ाते हो? रैफो कैसे बने तुम?'

दूसरा मित्र, 'यार इसके लिये भी सिफारिशें लड़ानी पड़ीं पहले।'

● नौकर—मालिक, मैं पिछले तीस बरस से आपके यहां नौकरी कर रहा हूं। मैंने कभी वेतन बढ़ाने की मांग अब तक नहीं की।

मालिक—इसी कारण तो तीस बरस यहां काम करते रहे तुम। ●

एक नौजवान मेरे सपनों में आता है उसी से विवाह करूंगी···"

जाहिरा

जाहिरा फिल्मों में प्रवेश से पहले 'माडल गर्ल' थीं और यह माडलिंग का कार्य इन्होंने लन्दन में शुरू किया था! छोटी उम्र में ही यह पढ़ने के लिए लन्दन चली गई थी। वहीं इन्होंने शिक्षा प्राप्त की और माडलिंग के बाद फिल्मों में भी प्रवेश किया। एक अंग्रेजी फिल्म 'आनहर मैजेस्टिज सर्विस' में इन्होंने सर्वप्रथम अभिनय किया।

जाहिरा का हिन्दी फिल्मों में प्रवेश भी अचानक ही हो गया। हुआ यूं कि जाहिरा अपनी कुछ सहेलियों सहित भारत आईं। भारत आने का उद्देश्य यह था कि इन्होंने लक्स साबुन के विज्ञापन के कुछ पोज देने थे। कान्ट्रेक्ट निभाने के साथ जाहिरा की सहेलियों ने बम्बई घूमने की इच्छा प्रकट की। लिहाजा जाहिरा अपनी सहेलियों सहित बम्बई आ गईं। लेकिन बम्बई का वातावरण (जलवायु) जाहिरा की सहेलियों को रास नहीं आया और उन्होंने वापस जाने का निवेदन किया। यह सभी सहेलियां सुनील दत्त के यहां ठहरी थीं क्योंकि जाहिरा उस समय केवल सुनील दत्त और नरगिस को ही जानती थीं, क्योंकि इन दोनों ही से लन्दन में जाहिरा पहले मुलाकातें कर चुकी थीं। सुनील दत्त के ही यहां देव आनन्द की जाहिरा से मुलाकात हुई। उन्हीं दिनों देव आनन्द अपनी फिल्म 'गैम्बलर' की प्लानिंग बना रहे थे। उन्हें एक नई लड़की की आवश्यकता थी, जाहिरा देव आनन्द के दिलो दिमाग में जंच गई और इन्होंने जाहिरा को 'गैम्बलर' के लिए साइन कर लिया। जाहिरा को हिन्दी फिल्म मिल जाने के कारण इनका शीघ्र वापस लन्दन लौटना कठिन हो गया और फिर जाहिरा ने अपनी सहेलियों को बम्बई से लन्दन की ओर रवाना कर दिया। स्वयं जाहिरा ने यह सोच लिया कि 'गैम्बलर' की शूटिंग (जो जल्दी होनी तय हुई थी) के बाद ही लन्दन चली जायेंगी। फिल्म 'गैम्बलर' बनने में देर होती चली गई और फिर जब 'गैम्बलर' बनकर रिलीज हुई तब तक जाहिरा के पास अन्य कई आफर आ चुकी थीं। लेकिन जाहिरा वापस लन्दन चली गईं और जब लौटकर वापस आईं तब तक जाहिरा की साथी अभिनेत्रियां जाहिरा से आगे निकल चुकी थीं। इसी सम्बन्ध में जब मैंने जाहिरा से पूछा तो वह बोलीं, लन्दन वापस जाना मुझे महंगा पड़ा। मैं अपना एक पी० आर० ओ० नियुक्त कर गई थी जो फिल्म इन्डस्ट्री से सम्बन्धित था लेकिन मेरे लन्दन जाने के बाद उसने मेरे बजाय एक और अभिनेत्री (जिसका वह पी० आर० ओ० था) को फिल्में दिलाईं। यह सब बातें मुझे बम्बई वापस आकर पता चलीं तो बहुत दुख हुआ लेकिन मैं दोबारा लग्न और मेहनत से अपने कार्य में जुट गई। मेरी मेहनत रंग लाई और मुझे फिर फिल्में मिलने लगीं। अब मैं अपनी बिजनैस की अधिकतर देख-रेख खुद ही करती हूं।'

जाहिरा का जन्म लाहौर में हुआ। रूप सौन्दर्य से भरपूर व्यक्तित्व वाली जाहिरा अभी तक अविवाहित है। भावी पति के बारे में जब मैंने जाहिरा से पूछा तो वह मुस्करा उठीं, 'शादी करूंगी, अवश्य करूंगी लेकिन कब करूंगी यह नहीं बता सकती। क्योंकि पता नहीं कब वह नौजवान मुझे साक्षात दिखाई देगा जो मेरे सपनों में आता है। मैंने अपने होने वाले पति की छवि अपने दिलो दिमाग में बना रखी है··· मैं धार्मिक प्रवृत्ति, गठे हुए बदन वाले उस नौजवान को प्राथमिकता दूंगी जो नारी की पूर्ण सुरक्षा का दम भर सके।'

—विजय भारद्वाज

मानक मोती
मेन एवन्यु. खार बम्बई